दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 209 | ग्वालियर शनिवार, 20 मई 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

16 राज्यों में 27 मई तक बारिश, आंधी का अलर्ट, इन क्षेत्रों में लू-हीटवेव का अलर्ट,

बिहार पर देश के कई राज्यों में मौसमी परिवर्तन दिख रहा है। राजधानी दिल्ली सहित राज्य में पिछले वर्ष के बाद अब एक बार फिर से मौसम करवट बदल रहा है। आईएमडी के मुताबिक उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश सहित कई क्षेत्रों में मौसम बदल गया है। तेज हवा चल रही है। आंधी के साउथ बारिश का पूर्वानुमान जताया गया है। वहीं कुछ क्षेत्र में भारी बारिश का येलो अलर्ट भी जारी किया गया है।मौसम विभाग के मुताबिक पूर्वी राज्य असम, मेघालय, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा में भारी बारिश का रेड अलर्ट जारी किया गया है। इस दौरान करें चमक आंधी सहित बिजली गिरने की चेतावनी भी जारी की गई है। भूस्खलन से लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है। तापमान में तीन से चार फीसद की गिरावट रिकॉर्ड की जाएगी।पश्चिम बंगाल और सिक्किम में गरज चमक के साथ बारिश का पूर्वानुमान जताया गया है। इस क्षेत्र में तेज हवा चलने का भी अलर्ट जारी किया गया है। लोगों को सतर्क करने की सलाह दी गई है। इन क्षेत्रों में बूंदाबादी अलर्ट जारी किया गया है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, लद्दाख सहित पश्चिम बंगाल, केरल, माहे, बिहार, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु, पुडुचेरी और आंतरिक कर्नाटक में भी गरज चमक के साथ बूंदाबादी रिकॉर्ड की जा सकती है।कुछ क्षेत्रों में तापमान बढ़ने का भी पूर्वानुमान जारी किया था। जिन क्षेत्रों में तापमान बढ़ने की चेतावनी जारी की गई। उसमें राजस्थान , गुजरात, के अलावा छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु तेलंगना शामिल है। इन क्षेत्रों में गर्मी तेज हवाएं चली। क्षेत्रों में लू का भी अलर्ट जारी किया गया है।जिन से 2 मीटर की चेतावनी जारी की गई है। उसमें राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश सहित कई राज्य शामिल हैं। इसके अलावा बिहार, झारखंड और उड़ीसा में भी 25 मई तक हीटवेव का कहर देखने को मिलेगा। उत्तर पूर्व भारत के कई राज्यों में 5 दिन तक भारी बारिश देखने को मिल सकती है।असम, मेघालय और पूर्वी राज्यों में 25 मई तक भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है जबकि पश्चिम बंगाल झारखंड और बिहार के कुछ हिस्से में तेज हवा चलने सहित बिजली गिरने की भी चेतावनी जारी की गई है।महाराष्ट्र, गोवा सहित मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, गुजरात तापमान में वृद्धि का पूर्वानुमान जताया गया है। तापमान बढ़कर 42 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकते हैं। कुछ क्षेत्रों में तेज गर्म हवाएं चलने का भी पूर्वानुमान जारी किया गया है।आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु के कुछ इलाके में बिजली और छींटे पड़ने का पूर्वानुमान जताया गया है। 21 मई को कर्नाटक में बिजली चमकने के साथ भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है।हरियाणा दिल्ली पंजाब में बुधवार को मौसम गर्म बना रहा है। वहीं गुरुवार से लेकर रविवार तक इन राज्यो में मौसम गर्म, अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया जा सकता है। वहीं हरियाणा के हिसार में अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। तेज हवाएं चल रही है। कुछ इलाकों पर हीटवेव की चेतावनी जारी की गई है।मौसम विभाग के मुताबिक अगले 48 घंटे के दौरान मानसून के साउथ वेस्ट बंगाल की खाड़ी दक्षिण अंडमान और निकोबार दीप समूह की और बढ़ने की संभावना व्यक्त की गई है। इस बार मानसून सामान्य रिकॉर्ड किया जा सकता है। इसके साथ ही मानसून की एंट्री भी इस बार भारत में तीन से चार दिन देर से बताई जा रही है।

लक्ष्मण सिंह का बड़ा बयान, विधानसभा चुनाव बाद सिंधिया को गलती महसूस होगी

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के भाई लक्ष्मण सिंह का बड़ा बयान सामने आया है, उन्होंने इंदौर में कहा कि ज्योतिरादित्य सिंधिया को मैंने कभी भी गद्दार नहीं कहा, लेकिन इतना जरूर है कि अगले विधानसभा चुनाव के बाद कोई अपनी गलती महसूस होगी। उन्होंने कहा कि भाजपा के बहुत से नेता है जो कांग्रेस में आना चाहते हैं। लक्ष्मण सिंह ने दावा किया कि मध्य प्रदेश में कर्नाटक से बड़ी जीत होगी।इंदौर प्रेस क्लब में मीडिया से बात करते हुए लक्ष्मण सिंह ने कहा कि कमल नाथ और दिग्विजय सिंह ने बहुत सी सीटों पर सर्वे किया है और इस विधानसभा चुनाव में अच्छे अंतर से कांग्रेस जीत दर्ज कराएगी। कर्नाटक में कांग्रेस की जीत पर उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में कांग्रेस की कर्नाटक से बड़ी जीत होगी। इसके अलावा उन्होंने प्रदेश की राजनीति प्रदेश के विकास यहां के वन क्षेत्र और किसानों की समृद्धि तथा कूनो में लाए गए चीतों को लेकर भी बात की।मध्य प्रदेश की राजनीति में युवा नेतृत्व को लेकर उन्होंने कहा कि कमल नाथ और दिग्विजय सिंह की जोड़ी युवा नेतृत्व ही है। उनकी उम्र से इसका संबंध नहीं है वह आज भी बहुत काम करते हैं और सुबह से रात तक मध्य प्रदेश और कांग्रेस के लिए भागदौड़ कर रहे हैं। अबकी बार फिर सरकार बनाएंगे।बेटी को सबकी नड़रों से बचाने के लिए आलिया और रणबीर क्या कर रहे हैंप्रदेश के वन क्षेत्र को लेकर उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में 44 प्रतिशत क्षेत्र में फोरेस्ट है,

बीजेपी कार्यसमिति की बैठक

सीएम शिवराज दिलाया ने एकजुट होने का संकल्प, कहा 'मिलकर पाएंगे महाविजय'

सीएम शिवराज सिंह चौहान ने आज बीजेपी कार्यकर्ताओं को संकल्प दिलाया कि आने वाले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ऐतिहासिक विजय प्राप्त करे, इसके लिए सभी पूरी कर्मठता से काम करेंगे। इस मौके पर उन्होने कांग्रेस पर बड़ा हमला करते हुए कहा कि जितने घोटाले तत्कालीन कांग्रेस सरकार और कमलनाथ के कार्यकाल में हुए, उसके बाद जनता फिर कभी उन्हें अपना समर्थन नहीं देगी।भोपाल स्थित प्रदेश बीजेपी कार्यालय में आज बीजेपी कार्यसमिति की बैठक हो रही है। यहां सीएम शिवराज सिंह चौहान, प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा सहित प्रदेश कार्यसमिति के विशेष आमंत्रित और स्थायी सदस्य, केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य, लोकसभा व राज्यसभा सदस्य, बीजेपी के राष्ट्रीय पदाधिकारी, विधायक, महापौर, जिला पंचायत अध्यक्ष सहित 1100 से अधिक लोग शामिल हुए। बैठक का मुख्य उद्देश्य चुनाव को लेकर आगामी 1 महीने के मेगा कैंपेन पर चर्चा करना है। यहां प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कांग्रेस पर जमकर हमला बोला।वहीं सीएम शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कांग्रेस कार्यकाल में जिसने घोटाले और भ्रष्टाचार हुए, वो किसी से छिपा नहीं। उन्होने कहा कि सिंचाई घोटाला, कृषि यंत्र खरीदी घोटाला, ट्रांसफर उद्योग सब कमलनाथ सरकार में धड़ल्ले से चल रहा था। इसी के साथ उन्होने बीजेपी की योजनाओं भी गिनाई और कहा कि उनका लक्ष्य है कि प्रदेश में अंतिम व्यक्ति तक जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचे। इस मौके पर उन्होने आह्वान किया कि इस चुनाव में कार्यकर्ताओं से लेकर मंत्रियों तक को पूरी तरह से एकजुट होकर काम करना होगा। उन्होने सभी को संकल्प दिलवाया कि सभी लोग चुनाव के लिए जुट जाएं, भले ही किसी को टिकट मिले या नहीं। चुनाव में महाविजय प्राप्त करने के लिए सभी को मिलकर कोशिश करनी होगी तभी वो ऐतिहासिक जीत प्राप्त कर पाएंगे। उन्होने कहा कि हम सभी एक परिवार के सदस्य हैं और ये संकल्प लें कि जब अगली बार मिलेंगे तो चुनाव में जीत प्राप्त करने के बाद मिलेंगे।

मध्य प्रदेश के किसानों के लिए राहत भरी खबर, समर्थन मूल्य पर मूंग खरीदी के लिए पंजीयन की तारीख बढी,

मध्य प्रदेश के किसानों के लिए अच्छी खबर है। राज्य की शिवराज सरकार ने किसानों के हित में एक और बड़ा फैसला किया है। राज्य सरकार ने ग्रीष्मकालीन मूंग के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी के पंजीयन की तारीख को 31 मई तक बढ़ाने का फैसला लिया गया है।पंजीयन की आज आखरी डेट थी। राज्य सरकार ने मूंग का समर्थन मूल्य 7755 रुपए प्रति क्विंटल तय किया है। इस भाव में किसान अपनी फसल बेच सकेंगे। प्रदेश के 32 जिलों में मूंग की खरीदी की जाएगी।

31 मई तक करा सकते है पंजीयन-सीएम शिवराज सिंह चौहान ने ट्वीट कर लिखा है कि अन्नदाताओं की खुशहाली के लिए प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है मध्यप्रदेश सरकार।किसान हित में राज्य सरकार का महत्वपूर्ण फैसला। किसान भाई अब 31 मई तक कर सकेंगे ग्रीष्मकालीन मूंग के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी के लिए पंजीयन। किसान भाइयों आपके हित को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा ग्रीष्मकालीन मूंग के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी के पंजीयन की तारीखदिनांक 31.05.2023 तक बढ़ाने का फैसला लिया गया है। विपणन वर्ष 2023-24 में ग्रीष्मकालीन मूंग की खरीदी के लिए पंजीयन प्रक्रिया 08 मई से शुरू हो चुकी है।

अनियंत्रित बस ने बाइक सवार युवकों को मारी टक्कर, 2 की मौके पर मौत, दो घायल

धार जिले के एक बस ने बाइक सवार दो युवकों को टक्कर मार दी। बाइक सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। बाइक को टक्कर मारने के बाद ड्राइवर ने बस से कंट्रोल खो दिया, बस सड़क पर ही पलट गई। जिसमें बस में सवार एक महिला के हाथ में गंभीर चोट आई है।दरअसल, बाग की पांडव गुफा के पास एक तेज रफ्तार बाइक और राजगढ़ की ओर से आ रही बस की आमने सामने टक्कर हो गई, जिससे बाइक सवार दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं बस भी अनियंत्रित होकर पलट गई जिसमें सवार दो लोगों की चोटे आई है जिन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में उपचार चल रहा है।

कर रहा था विद्युत् पोल चोरी, मिल गई सलाखें

आपने चोरी के कई किस्से सुने होंगे जिसमें चोरों के बड़े बड़े कारनामे भी सुने होंगे, हम भी आपको आज चोर का एक ऐसा ही कारनामा बताने जा रहे हैं जो शायद ही पहले आपने सुना होगा, जी हाँ हां बात कर रहे हैं ऐसे साहसी चोर की जिसने अपने चार साथियों के साथ बिजली के खंबे को चोरी करने का प्रयास किया लेकिन पकड़ा गया और हवालात पहुँच गया।चोरी का ये मामला मप्र मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के गुना संचारण संधारण संभाग के पगारा वितरण केंद्र का है, जहाँ कंपनी के कनिष्ठ यंत्री पी सी जैन ने विद्युत पोल को गैस कटर से काट कर चोरी कर ले जाने के मामले में आरोपियों को रंगे हाथो पकड़ा है। श्री जैन ने एक आरोपी को विद्युत पोल सहित थाने के सुपुर्द किया, उसके साथी फरार हो गए।

सराफा व्यापारी से लूट का खुलासा, 4 आरोपी गिरफ्तार

जबलपुर में बीतें दिनों हुई सराफा व्यापारी के साथ लूट का जबलपुर पुलिस ने खुलासा किया है। पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिनके कब्जे से लूट के 30 लाख के जेवरात सहित 50 हजार रूपए नगद जब्त करने की कार्रवाई की गई हैं। लूट की घटना 11 मई की रात भेड़ाघाट थाना क्षेत्र स्थित तेवर की हैं। जहां आरोपियों ने सराफा व्यापारी को मोटरसाइकिल से गिरा दिया था और चाकू मारकर आरोपियों ने वारदात को अंजाम दिया था।पुलिस अधीक्षक टीके विद्यार्थी मुताबिक लूट की घटना को प्लान बनाकर तैयार किया गया था। जिसमें सराफा व्यवसायी ओमप्रकाश सोनी के साथी 18 वर्षीय संजय सोनी ने प्लान किया थी। संजय का व्यापारी के साथ सराफा व्यवसायी का 1 साल पहले विवाद हुआ था। जिसकी रंजिश भुनाने के चलते प्लान को तैयार किया गया था। प्लान में संजय सोनी सहित अन्य तीन आरोपी भी शामिल थे। तीनों आरोपी शेखर चौधरी, करण भाट और विनय साहनी ने बीच रास्ते में सर्राफा व्यवसायी की मोटरसाइकिल को रोका और चाकू मार घटना को अंजाम दिया था।

सिर पर पत्थर पटक कर आदतन अपराधी की हत्या, ग्रामीणों में खुशी की लहर, तीनों आरोपी पुलिस हिरासत में

जबलपुर में बीती रात तीन युवकों ने मिलकर एक युवक की सिर पर पत्थर पटक कर हत्या कर दी। मृतक का नाम गोपाल साहू था जो कि आदतन अपराधी था, बीते दिनों आरोपियों के पिता के साथ मृतक गोपाल साहू का विवाद हुआ था जिसके चलते गुरुवार की रात को दो सगे भाई विपिन और तपन ने अपने एक साथी प्रताप के साथ मिलकर गोपाल साहू के सिर पर पत्थर पटक कर उसकी हत्या कर दी।खमरिया थाना पुलिस ने तीनों ही आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है,

भोपाल कोर्ट में पेश 16 संदिग्ध आतंकी, 10 की फिर रिमांड, 6 को भेजा जेल

मध्यप्रदेश और तेलंगाना से 16 संदिग्ध आतंकियों को शुक्रवार को कोर्ट में पेश किया गया। शुक्रवार को इनकी 10 दिन की रिमांड पूरी हुई है, जिसके बाद इन्हे लेकर एंटी टेररिस्ट स्क्वॉड सभी को क?ी सुरक्षा के बीच कोर्ट लेकर पहुंचा। जहां पेशी के बाद कोर्ट ने इनमें से 10 को 24 मई तक पूछताछ के लिए रिमांड पर सौंपा है। वहीं, 6 संदिग्धों को जेल भेज दिया गया है। सभी संदिग्धों को अपर सत्र न्यायाधीश रघुवीर पटेल की कोर्ट में पेश किया गया।ञ्जस् ने पूछताछ के लिए इनकी रिमांड मांगी। बचाव पक्ष की ओर से इसका विरोध किया गया। कोर्ट ने रिमांड मंजूर कर ली। अब 24 मई को इन सभी को फिर पेश किया जाएगा।कोर्ट ने यासिर खान, सैय्यद सामी रिजवी, दानिश अली, मोहम्मद आलम, खालिद हुसैन, मोहम्मद हमीद, मोहम्मद अब्बास, अबुल रहमान, जुनैद और सलीम को रिमांड में भेजा गया है। एटीएस ने 9 मई को भोपाल से 10, छिंदवाड़ा से 1 और तेलंगाना से 5 लोगों को हिरासत में लिया था।

नारकोटिक्स टीम की बड़ी कार्रवाई, डोडा चूरा व अफीम के साथ पांच तस्कर गिरफ्तार

युवाओं को नशे से बचाने के लिए नारकोटिक्स पुलिस तस्करों पर कार्रवाई कर रही है इसी क्रम में आज नीमच जिले की जावद तहसील में एक ट्रैक्टर के टायरों के ट्यूब में चाय की पत्ती के पैकट में डोडा चूरा व अफीम रखकर तस्करी की जा रही थी। जावद में सीबीएन टीम ने जांच कर पांच तस्करों को गिरफ्तार किया है।अधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि मुखबिर की सूचना पर सेंट्रल ब्यूरो ऑफ नारकोटिक्स की एक टीम ने जावद सर्कल, जवाद-बावल रोड से संदिग्ध मार्ग पर निगरानी रखी थी। मुखबिर के बताए वाहन की पहचान के बाद इसे रोककर तलाशी। उससे पूछताछ के बाद वाहन में सवार व्यक्ति ने खुलासा किया कि ट्रॉली में रखे 8 टायरों में पोस्ता भूसा पाउडर छुपाया है।वाहन की पूरी तरह से तलाशी ली गई और 695 मदर सीटीसी÷ ब्रांड के चाय के पैकेटों में पैक किया कुल 161.650 किलोग्राम पोस्ता भूसा पाउडर और 9 पॉलिथीन पैकेट (कुल 704 पैकेट) और आठ टायरों में छुपाकर रखा 0.100 किलोग्राम अफीम बरामद किया। एक हुंडई सैंट्रो कार, एक मारुति रिट्ज कार और एक बाइक के साथ चार व्यक्तियों को भी हिरासत में लिया। एनडीपीएस अधिनियम, 1985 के प्रावधानों के तहत पांच लोगों को गिरफ्तार किया है।

स्वास्थ्य मंत्री के फर्जी लेटर पैड से 1 करोड़ 39 लाख की ठगी, आरोपी जिला अस्पताल के सिविल सर्जन का भतीजा

कटनी में प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डॉ प्रभूराम चौधरी का फर्जी लेटर पैड और फर्जी सरकारी टेंडर दिखाकर 1 करो? 39 लाख रुपए की ठगी करने का मामला सामने आया है। इसे लेकर कोतवाली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई और पुलिस ने पूरे मामले की जांच के बाद जिला अस्पताल के सिविल सर्जन के भतीजे अर्पित वर्मा के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे अरेस्ट किया है।कटनी एसपी अभिजीत रंजन ने बताया की कोतवाली थाने में पांच लोगों ने शिकायत की थी की उनके साथ अर्पित वर्मा नाम के व्यक्ति ने धोखाधड़ी की है। उसने प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभूराम चौधरी का फर्जी लेटर पेड और फर्जी सरकारी टेंडर दिखाकर उनसे 1 करो? 39 लाख रुपए की ठगी की। जिस शिकायत के आधार पर मंत्री के लेटर पैड की कोतवाली पुलिस ने जांच कराई और जांच में बाद यह पता चला की यह लेटर फर्जी है। साथ ही ये भी पाया गया कि जालपा वार्ड निवासी रुपेश सरावगी, सिद्धार्थ खर्द, पुरानी बस्ती निवासी सत्यम शर्मा, मुसरहा वार्ड निवासी अरुण कुशवाहा और खंडवा जिले के छैगांव निवासी आदित्य गगराडे से माधवनगर थाना क्षेत्र के समद?या सिटी निवासी और एबी वेरियर्स सर्विसस फर्म के अर्जित वर्मा ने फर्जी दस्तावेज दिखाकर योजनाबद्ध तरीके से धोखाध?ी करते हुए करोड़ों की ठगी की है। इसके बाद कोतवाली पुलिस ने अर्पित वर्मा को अरेस्ट कर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। वही इस पूरे मामले में अर्पित वर्मा से जुड़े हुए लोगो की भी छानबीन शुरू कर दी है।

भाजपा और कॉन्ग्रेस ओबीसी वर्ग हितेषी है ,तो संख्या के अनुपात में आगामी विधानसभा चुनाव में टिकट दे-रोहित

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

दतिया -ओबीसी महासभा दतिया के जिला प्रवक्ता व क्रांतिकारी रोहित हुकुम कुशवाह रमगढा-चिमघनने बताया कि वर्तमान सत्ताधीश पार्टी व कांग्रेस अगर वाकई में पिछड़ावर्ग की हितैसी है, तो ओबीसी वर्ग के प्रतिनिधि को टिकट दे।बड़े अफसोस की बात है कि दतिया जिले से हर बार 3 विधायक चुने जाते हैं मगर एक भी ओबीसी वर्ग का नहीं ? पिछड़ा वर्ग की संख्या सबसे ज्यादा है, सभी राजनीतिक पार्टियों में कार्यकर्ता व समर्थक तक भी ओबीसी वर्ग से ही मिलेगे।रोहित हुकुम ने यह भी बताया कि वर्तमान सत्ता साफ तौर पर ओबीसी वर्ग की हितेषी नहीं है? अगर ओबीसी वर्ग

प्रतिनिधित्व अभी तक क्यूं नहीं दे हितेषी है तो संख्या के आधार पर पाई?मंडल कमीशन की रिपोर्ट क्यूं पैंडिंग में डली है? एससी, एसटी ,माइनॉरिटी एवं सवर्णों सभी की गिनती होती है तो मध्यप्रदेश के पिछड़ा वर्ग की गिनती आखिर क्यों नहीं? देश व प्रदेश में पेड़ पौधे, घर मकानों इत्यादि सभी की गिनती होती मगर ओबीसी वर्ग की क्यूं नहीं यह एक प्रश्नवाचक चिन्ह है?रोहित हुकुम ने बताया कि जब चुनाव आते हैं तो दोनों सरकार हैं गरीब- किसान मजदूर व ओबीसी वर्ग की खूब हितेषी बनती है, संसद हो या विधानसभा दोनों पार्टी के सांसद व विधायक एक दूसरे के जिम्मेदार ठहराते रहते हैं और ओबीसी वर्ग के साथ सियासत के इस मैदान में फुटबॉल की भांति खिलवाड़ करते हैं।रोहित हुकुम ने अपने आखिरी क्रांतिकारी शब्दों में बताया कि भाजपा 18 साल से ओबीसी वर्ग की जातिगत जनगणना नहीं करवा पाई? संख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व नहीं दिलवा पाई? सेवढ़ा विधानसभा से लांच और सेवढा सनकुआ का पुल नहीं बनवा पाई?सेवड़ा विधानसभा का विकास धरातल पर बिल्कुल नहीं हुआ है? अगर कांग्रेस को इस बार सेंवढा विधानसभा से सीट निकाल ली है तो किसी ऐसे प्रतिनिधित्व को टिकट दे जो जनता में सक्रिय हो, किसानों-गरीबों, ओबीसी दलित पिछड़े व मानवतावादी सवर्णों की संवैधानिक बात खुल कर रखता आया हो...और किसानों व गरीबो की बात भोपाल के बल्लभ भवन मे भी बात रख सके,ऐसा विधायक हम सबको इस बार चुनना है।

श्रीमद्भागवत कथा का चौथा दिन

नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की....भागवतजी कथा में श्रद्धालु उमड़े

संवाददाता
प्रदीप जैन (पिंटू) रत्नौद

रत्नौद नगर मैं चल रही श्रीमद्भागवत कथा के चतुर्थ दिवस की कथा में भागवताचार्य पंडित श्री विनयकांत त्रिपाठी जी द्वारा अपनी मधुर वाणी से नरसिंह अवतार प्रहलाद चरित्र वामन अवतार राजा बलि की कथा समुद्र मंथन की कथा भगवान का मोहिनी अवतार गजेंद्र पर भगवान की कृपा सूर्य वंश के राजा रघु का वर्णन विस्तार से किया, कथा आयोजक रिटायर डीएसपी बैजनाथ सिंह यादव,बीरेंद्र सिंह यादव,

राजकुमार सिंह यादव।श्री राम जन्म एवं रामचरित्र का वर्णन चंद्र वंश के राजाओं की कथा करते हुए कंस के अत्याचार एवं भगवान के द्वारा देवताओं को आश्वासन देना भगवान श्री कृष्ण के प्राकट्य की कथा भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर नंद उत्सव की मनोहर झांकी के साथ पूरा पांडाल नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की से गुंजायमान हुआ।व्यास पीठ से बधाइयां बांटी गई। पूरे पांडाल में पुष्प वर्षा एवं टॉफी खिलौने मेवा मिष्ठान की वर्षा की गई नन्हे-मुन्ने बच्चों ने खूब आनंद लिया।।

थाना पिछोर पुलिस की कार्यवाही एक आरोपी के कब्जे से 6 पेटी अवैध देशी शराब कीमत करीवन 15000 रूपये जप्त कर आरोपी को गिरफ्तार किया

राकेश परिहार पिछोर

पिछोर, पुलिस अधीक्षक शिवपुरी रघुवंश सिंह भदोरिया एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवपुरी प्रवीण कुमार भूरिया के निर्देशन में एवं एसडीओपी पिछोर प्रशांत शर्मा के मार्गदर्शन में आज दिनांक 18 /05/23 को मुखबिर सूचना पर ग्राम नाद में कपूर लोधी की गुमटी उनि. नितिन भार्गव मय फोर्स के पहुंचे तो मुखबिर द्वारा बताये हुए हुलिये के दो व्यक्ति गुमटी पर बैठे देखें जो पुलिस को देखकर भागने लगे जिनमें से एक व्यक्ति को हमराही फोर्स की मदद से घेराबंदी कर पकड़ा तथा दूसरा व्यक्ति मौका पाकर भाग गया पकड़े गए व्यक्ति का नाम पता पूछा तो उसने अपना नाम कपूर पुत्र इमरत लोधी उम्र 20 साल निवासी ग्राम नाद का हो ना बताया व भागने वाले व्यक्ति का नाम मंगल पुत्र लखन लोधी निवासी ग्राम राजपुर कछौआ का हो ना बताया गुमठी को लाईट उजाले में चेक किया तो उसमें खाकी रंग के 06 कार्टून मिले जिन्हें खोलकर चेक किया तो प्रत्येक पेटी में 180 एमएल के 50ड्ड50 क्वार्टर देसी मदिरा प्लेन के सीलबंद भरे हुए मिले कुल 300 क्वार्टर कुल मात्र करीब 54 लीटर कीमती 15000 रुपये के मिले आरोपी से शराब लाने ले जाने के संबंध में लायसेंस चाहा तो न होना बताया बाद समक्ष पंचान उक्त शराब को आरोपी कपूर लोधी से विधिवत जप्त किया गया तथा आरोपी कपूर लोधी को विधिवत गिरफ्तार किया गया थाना वापसी पर आरोपी कपूर लोधी व आरोपी मंगल लोधी के विरुद्ध अपराध क्रमांक 246 /23 धारा 34 (2) आबकारी एक्ट का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया

उक्त कार्यवाही में-थाना प्रभारी पिछोर निरीक्षक गब्बर सिंह गुर्जर , चौकी प्रभारी हिम्मतपुर उप निरीक्षक नितिन भार्गव, आर, रामनाथ , ब्रजराज कमल , माधव , मांगीलाल की सराहनीय भूमिका रही

कलेक्टर द्वारा शाखा कोलारस में हुए 80.56 करोड़ के गवन में की गई बड़ी कार्यवाही

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- कलेक्टर रवीन्द्र कुमार चौधरी द्वारा जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक शिवपुरी की शाखा कोलारस में हुए 80.56 करो? के गवन में 169 व्यक्तियों को वसूली नोटिस के साथ आईपीसी धारा 120 (बी) अंतर्गत कार्यवाही करने हेतु नोटिस जारी किये गये है।ज्ञातव्य हो कि बैंक शाखा कोलारस में 80.56 करो? का गवन तत्कालीन बैंक कैशीयर राकेश पाराशर द्वारा किया गया था। कैशीयर राकेश पाराशर द्वारा गवन की राशि को प्रथम तय 24 व्यक्तियों के खाते में अंतरित की गई थी उसके पश्चात् 24 व्यक्तियों द्वारा 169 लोगों के खातों में राशि पुनः अंतरित की गई। अब कलेक्टर द्वारा इन सभी दौषी व्यक्तियों से वसूली के नोटिस के साथ

आईपीसी धारा 120 बी में सह-अभियुक्त बनाये जाने का कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। नोटिस में कलेक्टर द्वारा स्पष्ट किया गया है कि जो राशि संबंधित के खाते में अंतरित की गई है, उसको बैंक शाखा कोलारस में जमा कराते हुए अपना स्पष्टीकरण कलेक्टर के समक्ष प्रस्तुत करें। स्पष्टीकरण अथवा राशि जमा न होने की स्थिति में उपरोक्त 169 व्यक्तियों को 120 बी के तहत सह-अभियुक्त मानते हुए अपराधिक कार्यवाही की जाने हेतु प्रस्ताव पुलिस अधीक्षक जिला शिवपुरी को भेज दिया जाएगा।

जिला सहकारी बैंक मर्यादित शिवपुरी की शाखा कोलारस में 80.56 करोड रूपए की राशि का गबन हुआ है, जिसमें मुख्य आरोपी राकेश पाराशर पुत्र स्व.जगदीश पाराशर है। मुख्य आरोपी राकेश पाराशर के विरूद्ध दाण्डिक प्र.क्र.386/21 में पाराशर के साथ अन्य आरोपियों के विरूद्ध आईपीसी की धारा 409 में दाण्डिक कार्यवाही जारी है। इसी क्रम में दाण्डिक प्रकरण में राकेश पाराशर एवं अन्य के विरूद्ध आईपीसी की धारा 409, 420, 467, 468, 471, 120बी में दाण्डिक कार्यवाही प्रचलित है।उक्त व्यक्तियों में महेन्द्र भार्गव, मुकेश कुमार, राधेश्याम शर्मा, सुमनलता पारीक, सलीम खान, रेखा ओझा, रवि रजक, राकेश पाराशर, राधारमण पारीक, मुकेश कुमार, गिर्राजधरण पारीक, चंद्रप्रकाश ओझा, देवेन्द्र शर्मा, अंजलि शर्मा, महावीर प्रसाद जैन, सराफत, सुनील सैन, संस्था पचावली एवं लछमन लाल कुशवाह शामिल है।

थाना खनियाधाना पुलिस ने नाबालिग बालिका को अहमदाबाद से किया बरामद

राकेश परिहार पिछोर
पिछोर खनियाधाना ,

दिनांक 12.04.2023 फरियादी निवासी बार्ड क्रमांक 09 खनियाधाना अपनी नाबालिक लड़की राधा (बदला हुआ नाम) उम्र 17 साल को सतेन्द्र कुशवाह निवासी कुशवाह मौहल्ला खनियाधाना के द्वारा बहला फुसलाकर भगा ले जाने की रिपोर्ट की थी जिस पर से थाना खनियाधाना पर अपराध क्रमांक 201/2023 धारा 363 ताहि . का कायम कर विवेचना मे लिया गया बाद विवेचना प्रकरण मे धारा 366ए ,376,376(2)एन ताहि. ड ,5/6 पाक्सो एक्ट 3(1),(2-द्व),3(2)(1) एससी एसटी एक्ट की इजाफा की गई पुलिस अधीक्षक शिवपुरी द्वारा नाबालिक बालक बालिकाओं की दस्तयाबी हेतु हर संभव प्रयास कर जल्द से जल्द दस्तयाब करने के निर्देश दिए गए हैं उक्त आदेश के पालन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवपुरी श्री प्रवीण भूरिया एसडीओपी, पिछोर श्री प्रशांत शर्मा के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी स्वंय एवं सउनि प्रकाश सिह कौरव , आर. 363 जयवीर गुर्जर , आर. 895 राधे जादौन के साइबर सैल शिवपुरी की मदद से गुजरात के अहमदाबाद अपहृता राधा (बदला हुआ नाम) को दस्तयाव किया गया एंव आरोपी सतेन्द्र कुशवाह पुत्र हरवान कुशवाह को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय मे पेश किया जावेगा ।

उक्त कार्यवाही श्रीमान अति. पुलिस अधीक्षक महोदय जिला शिवपुरी श्री प्रवीण कुमार भूरिया (रा.पु.से.) के निर्देशन में निरीक्षक धनेद्र सिह भदौरिया , सउनि प्रकाश सिह कौरव , आर. 363 जयवीर गुर्जर , आर. 895 राधे जादौन की महत्वपूर्ण भूमिका एवं साइबर सैल प्रभारी निरी. सतीश चौहान व आर. जलज की बिशेष भूमिका रही ।

शिवपुरी पुलिस की बड़ी कार्रवाई थाना कोतवाली पुलिस द्वारा दो मोटरसाइकिल चोरों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 12 चोरी की मोटरसाइकिल जब्त की

राकेश परिहार पिछोर

मोटर सायकल चोरो का खुलासा विगत समय से शहर में लगातार हो रही मोटर सायकल चोरियों के संबंध में पुलिस अधीक्षक महोदय शिवपुरी श्री रघुवंश सिंह भदौरिया द्वारा लगातार मोनिटरिंग कर मोटर सायकल चोरों को पकडने हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया गया इस संबंध में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रवीण भूरिया एवं सीएसपी श्री अजय भार्गव के मार्गदर्शन में मुखबिर की सूचना पर से कोतवाली टीआई अमित सिंह भदौरिया द्वारा टीम गठित कर मोटर सायकल चोरो को पकडने हेतु रवाना किया गया जिस पर शहर शिवपुरी

के विभिन्न स्थानो से आरोपीगण महेश गुर्जर पुत्र पन्नालाल गुर्जर उम्र 32 साल नि0 ग्राम इमलावदा थाना कोलारस तथा बृजेश गोस्वामी पुत्र रामगिर गोस्वामी उम्र 27 साल नि0 ग्राम जाखनौद थाना पोहरी जिला शिवपुरी के कब्जे से चोरी गयी 12 मोटर सायकल कीमती करीबन 500000रू की बरामद की गयी उक्त सराहनीय कार्य में सउनि0 अमृतलाल, प्र0आर0 649 प्रमोद वर्मा, प्र0आर0 143 नरेश यादव, प्र0आर0 792 रविन्द्र सिरौनिया, प्र0आर0 562 जानकीलाल, प्र0आर0 152 जयकिशन राणा, प्र0आर0 618 अवधेश, म0प्र0आर0 भानवती उईके, आर0 अजीत राजावत, आँर0 भोले सिंह ठाकुर, आर0 भूपेन्द्र यादव, आर0 कुलदीप चतुर्वेदी का सराहनीय योगदान रहा।

स्वच्छता सर्वेक्षण के स्लोगन दीवाल लेखन में भ्रष्टाचार

तहसील व न्यायालय परिसर की दीवारों पर 2022 में लिखे स्लोगनों को 2023 का बताया

गोहद। नगर पालिका परिषद में स्वच्छता मिशन के अंतर्गत स्वच्छता के संदेशों को स्लोगनों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने के लिए दीवारों पर हर वर्ष नए-नए स्लोगन लिखवाएं जाते हैं। इसी के अंतर्गत पिछले वर्ष 2022 में स्वच्छता मिशन के संदेशों को घर घर पहुंचने के लिए नगर में कई स्थानों पर दीवारों पर स्वच्छता के स्लोगन लिखवाए गए थे। यह स्लोगन न्यायालय व तहसील परिसर की बाउंड्री वॉल पर भी दो दर्जन से अधिक स्थानों पर लिखवा गए थे। 2022 निकालने के बाद इस वर्ष भी स्वच्छता मिशन के संदेशों को घर घर पहुंचने के लिए दीवारों पर स्वच्छता के स्लोगन लिखने का कार्य नगर पालिका परिषद गोहद के द्वारा चलाए जा रहा है। जिसमें गोहद तहसील व न्यायालय परिसर की बाउंड्री वॉल पर इस वर्ष 2022 के इस लोगों पर ही 22 के स्थान पर 23 किया गया है। जबकि दीवारों पर स्लोगन लेखन का कार्य हर वर्ष नए रूप में किया जाता है जिसका भुगतान भी लेखन कार्य करने वाले ठेकेदार को नगर पालिका परिषद के द्वारा किया जाता है। इस वर्ष भी 2022 के लिखे हुए स्लोगनों का 2022 में किया गया भुगतान अब फिर से उन्ही स्लोगनों का भुगतान 2023 के स्वच्छता मिशन के बजट से किया जा रहा है। एक कार्य का दो-दो बार भुगतान करना भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है।

वर्जन- वरिष्ठ अधिकारियों की वाहवाही लूटने के लिए व कमीशन प्राप्त करने के लिए स्लोगन लेखन में भ्रष्टाचार नजर आ रहा है वरिष्ठ अधिकारियों को इस ओर ध्यान देने की जरूरत है, जबकि नगर में स्वच्छता का बुरा हाल है नालियां चौक हैं कई स्थानों पर गंदगी के अंबार लगे हुए हैं

राजेंद्र सिंह परिहार जिला सचिव कांग्रेस कमेटी भिंड

जो पुराने स्लोगन लिखे हुए उनको 22 के स्थान पर 23 किया गया है। अच्छे स्लोगनों को हटाया नहीं गया है उनकी केवल सन् बदली गई है।

एस आई अरविंद छारी यह ऐसे थाना प्रभारी हैं जिस थाने में भी रहे अपनी एक अलग छाप छोड़ कर आए

शिवपुरी । अरविंद छारी के बारे में बता दें यह ऐसे थाना प्रभारी हैं जिस थाने में भी रहे अपनी एक अलग छाप छोड़ कर आए जिस थाने से गए उस थाने का पुलिस स्टाफ एवं क्षेत्र की जनता उन्हें भूल नहीं पाती स्ढु अरविंद छारी एक ऐसे थाना प्रभारी हैं जिन्होंने शिवपुरी जिले में कई ऐसे अच्छे काम किए हैं जैसे कि शिवपुरी जिले के सतनवाड़ा थाना प्रभारी रहते हुए बाढ़ पीड़ितों की अपनी जान पर खेलकर जान बचाई सुभाष पुरा थाने में 56 दिन रहे 56दिन में 28 कार्रवाई करने वाले पहले थाना प्रभारी स्ढु अरविंद छारी आपको बता दें स्ढु अरविंद छारी को कई बार प्रमाण पत्र से भी नवाजा गया अरविंद छारी दिल के बहुत साफ इंसान हैं चेहरे पर

हमेशा मुस्कुराहट बनी रहती हैऔर हर रोज किसी ना किसी की मदद करते रहते हैं बस उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि वह परेशान है इसीलिए इन्हें कुछ लोग सिंघम भी कहते हैं आपको एक चीज और बता दे अरविंद छारी पुलिस में आरक्षक से भर्ती हुए और आज रिजल्ट आपके सामने है सिटी कोतवाली प्रभारी टीआई अमित सिंह भदोरिया जी के मार्गदर्शन में सिटी कोतवाली में भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं और अब फिर बने फिजिकल थाना प्रभारी फिजिकल थाना क्षेत्र की जनता भी स्ढु अरविंद छारी को पसंद कर रही है स्ढु अरविंद छारी को पैसों की भी लालच नहीं है बस हमेशा वह अपने काम पर दिमाग लगाते हैं और सही को सही गलत को गलत कहते हैं बहुत जल्द इनका प्रमोशन भी होने वाला है

गुरुकुल ड्रीम फाउंडेशन का औद्योगिक भ्रमण सम्पन्न

गुरुकुल ड्रीम फाउंडेशन द्वारा छात्रों को उद्योग की प्रैक्टिकल जानकारी दिलाने के लिए औधोगिक भ्रमण प्रिसिशन इंडस्ट्रियल सिस्टम में रखा गया 7 फैक्ट्री के टेक्निकल हैड सतीश दुबे ने छात्रों को इंडस्ट्री से संबंधित जानकारी देते हुए मैन्युफैक्चरिंग की प्रक्रिया के बारे में बताया इंडस्ट्री में ट्रेन का ब्रैक लॉक बनाए जाने की विधि को छात्रों के साथ विस्तार से साझा किया इस अवसर पर संस्था संयोजक आकाश त्रिपाठी, जयेश श्रीवास्तव, मोहित सिंह,अंश बत्रा , मुस्कान गुप्ता सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे

पिछोर एसडीएम ने ली निर्वाचन से सम्बन्धित बीएलओ सुपरवाइजरों की बैठक

राकेश परिहार पिछोर

पिछोर विधानसभा क्षेत्र 26 में पिछोर एवं खनियाधाना के सभी बीएलओ सुपरवाईजरो एवं स्वीपप्रभारी की एक आवश्यक बैठक 19 मई शुक्रवार को एसडीएम कार्यालय पिछोर में की गई।पिछोर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अरविंद शाह द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि मतदाता सूचीयों में जो गलतियां हैं उनका शुद्धिकरण 25 मई तक किया जाना आवश्यक है, साथ ही प्रत्येक बीएलओ सुपरवाइजर को जिनकी ड्यूटी क्षेत्र में बीएलओ से कार्य कराने की लगाई गई है ।वह उन सभी बीएलओ को एक जगह एकत्रित कर मीटिंग कर शासन के जो भी दिशा निर्देश हैं उनका पालन कर कार्य कराया जाए ,एवं समय-समय पर इस संबंध में सम्पूर्ण जानकारी निर्वाचन कार्यालय को देते रहे ।उन्होंने कहा है कि निर्वाचन नामावली की मतदाता सूची में यदि किसी भी व्यक्ति की मृत्यु हो गई है और उसका नाम मतदाता सूची में है तो उस व्यक्ति का नाम तत्काल हटाया जाए।वही पिछोर तहसीलदार एसएस गुर्जर द्वारा सभी बीएलओ सुपरवाइजर को जानकारी देते हुऐ बताया कि यदि एक परिवार के सभी मतदाता एक ही ग्रह संख्या में दर्ज होकर एक ही मतदान केंद्र में मतदान करते है तो इसका प्रमाणीकरण बीएलओ से लेना आवश्यक है।यदि जहां मतदाता सूचियों में गड़बड़ी है,तो उसमें बीएलओ द्वारा सुधार करवाएं ।जहां भी मतदाता सूची में आधार लिंकिंग से

शेष रहे मतदाताओं के आधार नंबर एवं मोबाइल नंबर डोर टू डोर सर्वे में एकत्रित कर उनको एपिक नंबर से लिंक कराना आवश्यक है । 01अक्टूबर 2023 को जिन युवाओं की उम्र 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर ली है उन सभी व्यक्तियों के नाम मतदाता सूचियां में शत-प्रतिशत दर्ज होना चाहिए ।मतदाता सूचियों में दर्ज सभी मतदाताओं के तथा उनके रिश्तेदार का सरनेम जोड़ने का कार्य भी किया जाना है। खराब गुणवत्ता वाली फोटो को सुधार कर उनके स्थान पर नवीन फोटो भी लगवाए जाएं ,मतदान केंद्रों का भौतिक सत्यापन कर मतदान केंद्र पर न्यूनतम आवश्यक सुविधाएं वर्तमान में मतदान केंद्रों की स्थिति कैसी है, रहने की व्यवस्था कैसी है ,फर्नीचर विद्युत व्यवस्था है कि नहीं ,एवं महिलाओं के लिए प्रथक प्रथक शौचालय है या नही, इस पर भी विशेष ध्यान दिया जाए। प्रत्येक मतदान केंद्र में दिव्यांग मतदाता को चिन्हित कर उनकी जानकारी भी लेनी होगी ।मतदाता सूची में जहां 100 से अधिक आयु के वोटर्स हैं उनका बीएलओ द्वारा सत्यापन कर चिन्हित करना है। इसके साथ साथ प्रत्येक मतदान केंद्र से विशिष्ट मतदाता (बीआईपी)चिन्हित कर उसकी भी सूची तैयार करना है।बैठक में डॉ. अरविंद यादव प्रोफेसर स्वीप प्रभारी, आनन्द लिटोरिया सहायक स्वीप प्रभारी, हरिदास त्रिपाठी निर्वाचन सुपरवाइजर तथा समस्त बीएलओ सुपरवाइजर (सीएसी)आदि उपस्थित थे।

भाजपा नेता अशोक चौधरी बने क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्श समिति उत्तर मध्य रेलवे के सदस्य

केंद्रीय मंत्री सिंधिया की पहल पर रेल मंत्री ने सौंपी जिम्मेदारी

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक
पुष्पांजली टुडे

लहार-प्रदेश नेतृत्व एवम केंद्रीय ज्योतिरादित्य सिंधिया जी के अनुशंसा पर केंद्रीय रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव जी की विशेष अभिरुचि पर भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य एवम लहार के वरिष्ठ भाजपा नेता अशोक चौधरी जी को क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्श समिति उत्तर मध्य रेलवे का सदस्य मनोनित किया गया है।नई जिम्मेदारी मिलने पर श्री चौधरी ने केंद्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी एवम रेल मंत्री व प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त किया है।

नागरिक उड्डयन मंत्री श्रीमंत

29 कुण्डीय श्रीराधाकृष्ण महायज्ञ प्रारम्भ,श्रीमद् भागवत कथा के प्रथम दिन श्रद्धालुओं ने जाने कथा के मर्म

मनुष्य को भोजन को भजन एवं प्रसाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए-श्रीजी प्रिंयका शास्त्री

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक
पुष्पांजली टुडे

दबोह- नगर दबोह के समीप ग्राम धौरका में 29 कुण्डीय श्री राधाकृष्ण महायज्ञ सर्वजातिय सामूहिक कन्या विवाह महायज्ञ एवं श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ एवं संत प्रवचन प्रारम्भ।यज्ञ में कथा के प्रथम दिवस श्रीजी प्रियंका शास्त्रीजी ने श्रीमद् भागवत महापुराण की अमृत वर्षा से कृतारित किया।श्रीजी प्रियंका शास्त्रीजी ने श्रीमद् भागवत महात्म्य के विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस कलयुग में मनुष्य अपने भावों को सत्संग के जरिए ही स्थिर रख सकता है।सत्संग के बिना विवेक उत्पन्न नहीं हो सकता और बिना सौभाग्य के सत्संग सुलभ नहीं हो सकता

श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण करने से मनुष्य के सात जन्मों के पाप धुल जाते हैं।मनुष्य अपने जीवन में सातों दिवस को किसी ने किसी देवता की पूजा अर्चना करता है लेकिन मानव जीवन में आठवां दिवस परिवार के लिए होता है।कथा व्यास श्रीजी प्रिंयका शास्त्री ने विस्तार से बताया जीवन में भजन और भोजन में अंतर बताते हुए कहा कि भजन में कोई मात्रा नहीं होती भजन करने से मानव का मन सीधा ही प्रभु से जुड़ जाता है।उसी प्रकार भोजन में मात्रा होती है,मनुष्य को भोजन को भजन एवं प्रसाद के रूप में ग्रहण करना चाहिए।श्रीजी प्रिंयका शास्त्री द्वारा कथा वाचन के दौरान कहा गया कि इस कलयुग में केवल भोलेनाथ ही शीघ्र भक्ति से प्रसन्न हो जाते हैं केवल 3 महीने भोलेनाथ की भक्ति करने से मनुष्य के सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।प्रथम दिन की कथा के समापन से पूर्व आरती की गई,आरती करने के पश्चात उपस्थित श्रद्धालुओं ने भण्डारा प्रसाद का ग्रहण किया।इस दौरान यज्ञ प्रबंधक चंद्रशेखर कुशवाहा भगत जी ने बताया महायज्ञ के दौरान सुबह 07 से 11बजे तक यज्ञ हवन आदि, दोपहर 12 बजे से 03 बजे तक प्रवचन तथा 03 बजे से शाम 07 बजे तक श्रीमदभगवत कथा आयोजित की जाएगी शाम 07 बजे से भण्डारा तथा रात्रि 09 बजे से श्रीरामलीला का आयोजन किया जायेगा।इस दौरान यज्ञाचार्य शिवम् शास्त्री श्रीधाम वृंदावन,यज्ञ परीक्षत बब्बूराजा गुर्जर (गोटिया) कथा परीक्षत सुनीता-अनुरुध सिंह गुर्जर(ब?ेलला) को सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं समस्त क्षेत्रवासियो ने सहयोग किया।

महेन्द्रसिंह राजपुरोहित ने जरूरतमंद व्यापारीयों को छातरी साम्रगी का किया वितरण

पुष्पांजली टुडे

मैसूर। बन्नूर गांव में स्थित रोटरी स्कूल में रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष डाक्टर महेन्द्रसिंह राजपुरोहित ने अहसाय व गरीब फूटपात पर व्यापार करने वाले सब्जी व फूल फल आदि व्यापार करने वाले लोगों को छतरी का वितरण किया गया । पर्यावरण वैदिके जागृति संघ के अध्यक्ष महेन्द्र सिंह राजपुरोहित ने बताया की मई व जून में तेज धूप पडती है ।जिससे व्यापारीयों का कठिनाई का सामना करना पडता है। धूप से राहत के लिए व बारिश के मौसम मे छतरी अति आवश्यक है ।सभी व्यापारीयों ने महेन्द्र सिंह को धन्यवाद देकर आभार व्यक्त किया।इस अवसर पर जिला गवर्नर रोटरियन प्रकाश कारंत, नागराजू, प्रभाकर, केम्पेगवड़ा, योगेन्द्रा, सुरेश, डॉ राजीव, कृष्ण गौडा, वासुदेव, प्रसन्ना, रामचंद्ररू ,राजू, राजेंद्रा, मुरली गोपाल, प्रभाकर आदि मौजूद रहे

श्री हनुमानजी मंदिर जीर्णोद्धार प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव शुरू

पुष्पांजली टुडे

पाली।ग्राम निपल में पांच दिवसीय नव निर्मित श्री हनुमानजी मंदिर जीर्णोद्धार प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव की शुरुआत 20 मई शनिवार से होगी। आयोजन कार्यक्रम में विश्वगुरू महामंडलेश्वर स्वामी महेश्वरानंदजी जती महाराज भगाबाबाजी संत महंत उमाशंकर भारतीजी मंगल भारतीजी बाल भक्त भोलाराम सीरवी के पावन सानिध्य में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होगे।इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथी के रूप में पी पी चौधरी सासंद पाली, पुष्पेंद्र सिंह राणावत विधायक बाली, केसाराम चौधरी पूर्व विधायक मारवाड जंक्शन, शामिल होगे। शकर काग ने बताया की दि. 20 मई शनिवार को विनायक स्थापना रात्रि

जागरण में भजन मडली नीपल द्वारा भजनों की प्रस्तुति देगे। सोमवार को विशाल कलश यात्रा निकाली जाएगी जिसमें बड़ी सख्या में महिलाए बालिकाए भाग लेगी। अभिषेक यज्ञ हवन किया जाएगा ।बुधवार को हवन यज्ञ हनुमानजी वडगोला सुबह आठ बजे व दोपहर को व शाम महाप्रसादी रखी गई। रात्रि भजन संध्या में भजन गायक कलाकार लेहरूदास वैष्णव एण्ड पार्टी की ओर से मधुर भजनों की प्रस्तुतियां देगे।बुधवार को शुभ वेला में मूर्ति स्थापना कलश ध्वजा दण्ड स्थापना कि जाएगी। दोपहर को विजयसिंह एण्ड पार्टी की ओर से सुंदर कांड पाठ का कार्यक्रम कीया जाएगा। उक्त सभी कार्यक्रम में नवयुवक संगठन तथा समाज की मातृशक्ति महिला मंडल एंव समाज के गणमान्य सदस्य मौजूद रहेगे।ये जानकारी शंकर काग स्मार्ट बाजार पुणे द्वारा दी गई।

भिंड ग्वालियर हाईवे पर गंभीर रूप से घायल अवस्था में पड़े दो व्यक्तियों को मेहगांव पुलिस ने तत्परता से भिजवाया अस्पताल

थाना प्रभारी मेहगांव स्वयं की गाड़ी से घायलों को लेकर पहुंचे मेहगांव अस्पताल

महेंद्र शर्मा, उपसंपादक
पुष्पांजली टुडे

मेहगांव। आज रात्रि में भिंड ग्वालियर हाईवे पर एक्सीडेंट में घायल होकर दो व्यक्ति बीच हाईवे पर पड़े थे तभी थाना प्रभारी मेहगांव निरीक्षक रविंद्र शर्मा की गाड़ी वहां से निकली काफी लोग आस पास एकत्रित थे थाना प्रभारी ने लोगो की मदद से तत्काल घायलों को अपनी गाड़ी में बिठाया और इलाज हेतु मेहगांव अस्पताल लेकर पहुंचे जहां दुर्घटना में घायल 1-संदीप सिंह सिकरवार पुत्र पुरुषोत्तम सिंह सिकरवार उम्र 26 साल निवासी ग्राम गलेथा जिला मुरैना2 -राम शंकर शर्मा पुत्र बाबू राम शर्मा उम्र 70 साल निवासी ग्राम गोहर थाना पावई जिला भिंड का डॉक्टर द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया और प्राथमिक उपचार उपरांत घायल को जिला अस्पताल भिंड रेफर कर दिया

गया ।श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय श्री मनीष खत्री द्वारा थाना प्रभारीयो को दिए गए निर्देश के पालन में गोल्डन आवर में घायलों को ईलाज हेतु भिजवाया गया अस्पताल आम जनता से थाना प्रभारी मेहगांव निरीक्षक रविंद्र शर्मा की अपील आप भी जब किसी को अपने आस पास घायल अवस्था में पड़ा देखे या एक्सीडेंट की घटना होते देखे तो तत्काल मेडिकल इमरजेंसी नंबर 108, व पुलिस सहायता नंबर 100 पर कॉल करे गोल्डन आवर (दुर्घटना के पश्चात का वह 01 घण्टा जिसमे घायल को सर्वाधिक प्राथमिक उपचार की आवश्यकता रहती है) में घायल को भिजवावे अस्पताल और गुड सिमीरिटन स्कीम के तहत गवर्नमेंट आप को 5000 रूपये की सहायता राशि प्रदान करेगी आप से जबरदस्ती पुलिस पूछताछ भी नही की जाएगी

दमोह पुलिस की बड़ी सफलता, 12 किलो गांजा बरामद

पुष्पांजली टुडे

दमोह। 18 मई 2023 को मुखबिर की सूचना पर थाना प्रभारी रजपुरा राजीव पुरोहित के द्वारा 12 किलो गांजा थाना अंतर्गत ग्राम सिलपरी की पुलिया के पास से 02 व्यक्तियो के कब्जे से जप्त करने में सफलता प्राप्त की है दोनो आरोपी क्रमशः शिब्बू उर्फ सोमनाथ पटनायक एवं निहार रंजन पटनायक जिला सम्बलपुर उडीसा के रहने वाले है जो मुखबिर की सूचना के आधार पर सम्बलपुर से थोक मात्रा में गांजा लेकर वाया कटनी सिमरिया होते हुये सिलापरी के पास पहुंचने पर पकड़े गये है। आरोपियो के पास से 12 किलो

गांजा के अतिरिक्त 24000 /- रूपये नगद भी जप्त हुये है । पैसो के बारे में पूछने पर आरोपियो द्वारा चंदना ग्राम में रहने वाले राहुल राजा को 24000 /- रूपये में 02 किलो गांजा बेचा है जिसके यह रूपये है। इस आधार पर राहुल राजा निवासी चंदना को भी आरोपी बनाया गया। जिसकी तलाश करने पर अभी तक पुलिस की गिरफ्त में नही आया। मुखबिर की सूचना को मूर्त रूप देने में प्र आर सौरभ टंडन एवं राकेश अठ्या, सूर्यकांत पान्डेय एवं कामता अहिरवार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। थाना प्रभारी राजीव पुरोहित, सउनि किलाईमेंट जॉन आर राजेन्द्र, शर्मन सिंह ने आरोपियों को अभिरक्षा में लेकर गांजे की जसी की गई है। ज्ञात हो कि मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिये पुलिस अधीक्षक दमोह राकेश कुमार सिंह के निर्देशन पर एसडीओपी हटा वीरेन्द्र वहादुर सिंह के द्वारा एक अभियान चलाया जा रहा है जो निरंतर जारी रहेगा।

1200 का गैस सिलेण्डर बिगाड़ रहा किचिन का बजट- विभा पटेल

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। पूर्व कमलनाथ की ऐतिहासिक नारी सम्मान योजना के प्रचार प्रसार को लेकर दौरा कर रही प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष विभा पटेल का दमोह आगमन हुआ। जिला महिला कांग्रेस कमेटी द्वारा जिला कांग्रेस कार्यालय में आयोजित जिला स्तरीय महिला सम्मेलन कि प्रदेश महिला कांग्रेस की अध्यक्ष विभा पटेल ने कहा कि शिवराज सरकार महिला मतदाताओ को एक तरफ लाड़ली बहना के नाम पर 1000 रूपये दे रही है तो दूसरी तरफ 1200 रूपये का गैस सिलेण्डर देकर उनका किचन का बजट बिगाड़ रही है उन्होनें बताया कि मिशन 2023 विधानसभा का चुनावी शंखनाद करने राष्ट्रीय महासचिव 12 जून 2023 को जबलपुर आ रही है। विधायक अजय टंडन ने कहा कि मप्र की सम्मानीय जनता ने तो पिछली बार ही सरकार बना दी थी किंतु राजा महाराजाओ की कुंठित मानसिकता और अपने निजी स्वार्थो की खातिर चुनी हुई

सरकार गिरवा दी थी अब यही जनता इन्हें इस बार सबक सिखायेगी। जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रतनचंद जैन ने कहा कि भाजपा राज में गरीबो को भारी भरकम बिल दिये जा रहे है जिसको लेकर कमलनाथ जी ने घोषणा की है कि 100 यूनिट बिजली बिल माफ दौ सौ यूनिट बिजली बिल हाफ किये जायेगे। प्रदेश उपाध्यक्ष कविता पाण्डेय, प्रदेश महामंत्री राजलक्ष्मी, जिला महिला कांग्रेस प्रभारी भावना रोहण, महिला उत्पीड़न की प्रदेश अध्यक्ष प्रभा सोहगौरा, आयोजक महिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष रजनी ठाकुर, जिला शहर अध्यक्ष मनु मिश्रा, संभागीय प्रवक्ता निधि श्रीवास्तव, नगर पालिका उपाध्यक्ष सुषमा सिंह, सतीश जैन, लक्ष्मण सींग, मनीषा दुबे ने कहा कि कांग्रेस की सरकार बनने पर नारी सम्मान योजना के तहत 60 वर्ष की महिला तक को 1500 रूपये प्रतिमाह दिये जायेगे जिसके फार्म आ चुके है प्रत्येक पंचायत वार्ड में घर घर जाकर फार्म भरवाये जायेगे। प्रभात मिश्रा, अमिता सिंह, संध्या नायक, गीता लोधी, कमला निषाद, किरण रैकवार, सविता पटेल, सरोज रैदास, अंजली राय, रूखसार, कुसुमरानी, कमलेश उपाध्याय ने भी सम्मेलन को संबोधित किया। इस अवसर पर विजय बहादुर सिंह डीपी पटेल, अजय सरवरिया, अनिल जैन, विक्रम ठाकुर, भूपेन्द्र आजवानी, आशीष पटेल, मंजीत यादव, बसंत कुशवाहा, आयुष दुबे, अजय जाटव, नौशाद खान सहित कांग्रेस पदाधिकारियो की उपस्थिति रही।

ज्येष्ठ माह की अमावस्या को शनि जयंती एवं वट सावित्री कि हुई पूजा

महिलाओं ने वट सावित्री वृक्ष की पूजा कर पति की लंबी उम्र की कामना की

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। विवेकानंद कॉलोनी सिविल वार्ड 6 में स्थित शिव मंदिर में महिलाओं ने वट सावित्री वृक्ष की पूजा अर्चना कर अपनें पति की लंबी उम्र के लिए पूजा की एवं उपवास रखा।बत्री संख्या में वार्ड कि महिलाओं नें एकत्र होकर वट वृक्ष के नीचे पूजन अर्जन किया एवं पति कि लम्बी उम्र के लिए ईश्वर से कामना की। इस दौरान महिलाओं में प्रीति पांडेय, संध्या सेन, प्रीति सेन, नीता विश्वकर्मा, रीता, आरती, संध्या, कुसुम आठ्या, ममता सन, सुमन, अर्चना, विभा, अमृता, भारती सेन, गायत्री दुबे, प्रीति, मंजू, प्रतिज्ञा सेन, संजू यादव, सुमन, गरिमा ठाकुर ने धार्मिक रीति रिवाज से वट सावित्री वृक्ष की पूजा करते हुए पति की लंबी उम्र के लिए उपवास रखा।

ज्येष्ठ माह की अमावस्या को शनि जयंती एवं वट सावित्री पूजा की जाती है।पंडित रवि शास्त्री जी नें बताया कि स्कंद पुराण तथा भविष्योत्तर पुराण के अनुसार ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को यह व्रत करने का विधान है, वहीं निर्णयामृत आदि के अनुसार ज्येष्ठ मास की अमावस्या को व्रत करने की बात कही गई है।तिथियों में भिन्नता होते हुए भी व्रत का उद्देश्य एक ही है सौभाग्य की वृद्धि और पतिव्रत के संस्कारों को आत्मसात करना।यह व्रत ज्येष्ठ मास की त्रयोदशी से अमावस्या तक तीन दिनों तक किया जाता है विष्णु उपासक इस व्रत को पूर्णिमा को करना ज्यादा हितकर मानते हैं। वट सावित्री व्रत में %वट% और %सावित्री% दोनों का विशिष्ट महत्व माना गया है। पीपल की तरह वट या बरगद के पेड़ का भी विशेष महत्व है। पाराशर मुनि के अनुसार- %वट मूले तोपवासा% ऐसा कहा गया है। पुराणों में यह स्पष्ट किया गया है कि वट में ब्रह्मा, विष्णु व महेश तीनों का वास है। इसके नीचे बैठकर पूजन, व्रत कथा आदि सुनने से मनोकामना पूरी होती है। वट वृक्ष अपनी विशालता के लिए भी प्रसिद्ध है।

क्षेत्र की जनसंमस्याओ के निराकरण एवं जनहित की मांगो को लेकर आम आदमी पार्टी ने दिया एसडएम को ज्ञापन

दैनिक पुष्पांजली टुडे

वह विधानसभा क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं को लेकर आम आदमी पार्टी ने एसडीएम को ज्ञापन देकर निराकरण की मांग की है जिनमें गोहद नगर में वर्तमान समय मे गर्मी का मौसम चल रहा है इस कारण पानी का संकट और विकराल रूप उत्पन्न हो गया है नगर में नगर पालिका द्वारा पानी की समस्या को हल करने को कोई पयाप्त प्रबंध नही किया गया है लोगो के घर तक पानी नही पहुच रहा है टैंकर की व्यवस्था लागू की गई है वो भी सुचारू रूप से चालू नही है टैंकर अपने चहेते लोगो के घर पर पहुचाये जा रहे है आम आदमी इससे वंचित है नगर में सरकारी हैण्डपंप भी खराब पडे हुये है उनको जल्द से जल्द जाये पानी की समस्या से आम आदमी को निजात दिलाई जावे एवं ग्राम कमलापुर गोहद तहसील मे पानी की कोई व्यवस्था नही है ग्राम में पानी का समस्या का उचित प्रबंध किया जाये । गोहद तहसील मे विद्युत कम्पनी द्वारा आकलित विल दिये जा रहे है विद्युत कम्पनी द्वारा विजली विल के सुधार की जो गोहद केविद्युत केन्द्र पर जो व्यवस्था थी उसको को भी बंद कर दिया है जिसके कारण आम आदमी परेशान है व्यवस्था में सुधार किया जाये मीटर खपत के साथ आकलित विल दिया जाना न्यायोचित नही है। इसको खत्म किया जाये एवं विजली कटोती बहुत की जा रही है विजली कटोती जल्द से जल्द अंकुस लगाया जाये गोहद के वार्ड क्रमांक 08 मे डी. पी. दो माह से खराब पडी हुई है उसको सुधार किया जावे या डी. पी0 को वदला जावे । वांके का पुरा ग्राम मे एक डी. पी0 रखी जाये गोहद के वार्ड क्रमांक

17 टोडे वाली माता का पुरा पर एक डी. पी0 रखी जाये जिससे क्षेत्र की आम आदमी की विजली की समस्या का निदान हो सके।स्वस्थ्य व्यवस्थाओं को लेकर गोहद नगर के समुदायिक स्वस्थ केन्द्र में अनियमितता वढती जा रही है ना डॉक्टर समय पर मिलता है और ना स्टाफ समय पर मिलता है आम आदमी अपने इलाज के लिये हॉस्पीटल में भटकता रहता है डॉक्टर अपने प्राईवेट क्लीनिक जो कि सरकारी आवास पर चला रहे है वहा पर ज्यादा समय देते हैं। इस कारण हॉस्पीटल मे आम आदमी को सही इलाज नही मिल पा रहा है। एवं ग्रमीण क्षेत्रो से आने वाली माताये व बहिने प्राथमकि उपचार हेतु सोनो ग्राफी कराने आती है अस्पताल द्वारा सोनो ग्राफी नहीं की जाती है सोनो ग्राफी को प्रतिदिन कराने की व्यवस्था की जाये जिससे गर्भवती महिलाओ एवं ग्रामीण से आने वाली महिलाओ को प्राथमिकी उपचार एवं सोनो ग्राफी की सुविधा मिल सके वैसली बांध के पास गोहद से चौराहा रोड पर बने पुराना पुल जो कि जर्जर होने के काफी समय से बंद पड़ा हुआ है पुल की तुरंत मरम्मत करके पुल को सुचारू रूप से चालू किया जाये एवं भारी वाहन ऑवर लोड ट्रकों की आवाजाही पर अंकुस लगाया जाये । एवं पहाड गोहदी सिरसोदा, बगुलरी, देवसिह का पुरा होते हुये मौ रोड तक वाईपास रोड डलवाई जाये जिससे भारी वाहन वाईपास होते हुये निकाले जा सके।

ग्राम पंचायत कठुमाहाजी में आवास सूची का समय कराकर एवं कठुवाहाजी मे नय आवास बनवाने की प्रक्रिया तुरंत सुरू की जाये इन सभी समस्याओं का निदान दस दिन में नहीं होता है तो फिर पार्टी उग्र आंदोलन करने के लिए बाध्य होगी

पर्यटकों की भीड़ में बाघ भी बेहाल

जिम कॉर्बेट में नवम्बर से मार्च के बीच में इतनी भीड़ आती है, कि यह बाघ अभयारण्य अब बाघों से दूर होता जा रहा है। यहां की जैव विविधता नष्ट हो रही है और इसकी वज़ह है, लोगों में टूरिज़्म की ललक। ये टूरिस्ट वन्य जीवों को देखने नहीं आते बल्कि दिल्ली-लखनऊ, चंडीगढ़ की भीड़ और प्रदूषण से बचने के लिए यहां का रुख़ करते हैं। नतीजा महानगरों का प्रदूषण यहां भी पहुंच रहा है। रामनगर में तो इतनी भीड़ है कि सड़क पर वाहनों का निकलना दूभर है। हालांकि इधर सरकार ने काफ़ी सख़्ती कर दी है, फिर भी लोग यहां शहरी प्रदूषण फैलाने में क़तई नहीं हिचकते। लेकिन कुछ भी हो, बाघ अगर देखने हों तो उत्तराखंड का जिम कार्बेट और यूपी का अमानगढ़ सबसे उम्दा अभयारण्य हैं। दिल्ली से जिम कार्बेट जाने का सबसे सुगम रास्ता है वाया गजरौला, मुरादाबाद, ठाकुरद्वारा, काशीपुर और राम नगर होकर। लेकिन मुरादाबाद से ठाकुरद्वारा के बीच सड़क बहुत ख़राब है। इसलिए लौटने में हमने रूट रामनगर से कालाढूंगी, बाजपुर, रुद्रपर से रामपुर का बनाया। वहां से दिल्ली के लिए एनएच-24 (इसे अब एनएच-9 कहते हैं) पर चढ़े। रामनगर में रात बिताकर सुबह आप जिम कार्बेट में प्रवेश ले सकते हैं। जिम कार्बेट के अंदर वन विभाग के रेस्ट हाउसेज हैं पर उनमें बुकिंग पहले से करानी पड़ती है। इनमें से कुछ ऑन लाइन बुक होते हैं, लेकिन कोर एरिया वाले ऑफ़ लाइन। जितने भी प्राइवेट होटल या रिज़ॉर्ट हैं, वे इन रेंज के बाहर हैं। ये होटल महंगे भी हैं। पांच से दस हज़ार के बीच में सामान्य दर्जे के होटल। और वहां से जंगल सफ़ारी का आनंद लेने के लिए आपको रेंज के अंदर जाना पड़ेगा। इसलिए रेंज के भीतर रुकना बेहतर रहता है। जिम कॉर्बेट के किसी भी रेंज में जाने के लिए आपको अपनी गाड़ी राम नगर में छोड़नी पड़ेगी और सफ़ारी वालों की जिप्सी ले कर ही आप फ़ॉरेस्ट रेस्ट हाउस तक जा सकते हैं। रेंज के अंदर निजी गाड़ी ले जाने की अनुमति नहीं है। यह जिप्सी आपको 3500 रुपए प्रतिदिन की दर से मिलती है। अंदर जाने का परमिट आपको राम नगर के परमिट ऑफ़िस से मिलेगा। इसके तहत प्रति व्यक्ति फ़ीस 250 रुपए देनी होगी। जिप्सी की एंट्री का 1000 रुपए अलग से देना होगा। अंदर के रेस्ट हाउस 1250 से 2500 रुपए प्रति कमरे की दर से मिलेंगे। मैंने झिरना रेंज के ओल्ड फ़ॉरेस्ट रेस्ट हाउस में सुइट तीन दिन दो रातों के लिए बुक कराया था। चूंकि यह 1908 का बना हुआ है और आज भी उसकी वैसी ही शक्ल है। इसलिए यह रेस्ट हाउस 5000 रुपए प्रति दिन की दर से था। इस सुइट में दो बेड रूम और एक ड्रॉइंग रूम था। अंदर खाने का प्रति मील प्रति व्यक्ति 300 रुपए था और रूम सर्विस अलग। मेरे साथ मेरे परिजन थे। इस रेंज के लिए ढेला गेट से प्रवेश करते हैं, जो राम नगर से 20 किमी है। उधर धनगढ़ी गेट से प्रवेश लेकर आप ढिकाला पहुंच सकते हैं वहां पर फारेस्ट के रेस्ट हाउसेज के अलावा एक गेस्ट हाउस भी है। उसमें कई रूम मिल जाते हैं। इसके अलावा रामनगर-धनगढ़ी रूट में रामगंगा किनारे बहुत सारे प्राइवेट होटल भी हैं। घुमक्कड़ी और टूरिज्म में फर्क है। घुमक्कड़ी एक लगन है, एक जुनून और इसके लिए पैसों की जरूरत नहीं होती। लेकिन टूरिज्म एक व्यवसाय है। एक घुमक्कड़ दुनिया घूमता है कुछ नया जानने के लिए और कुछ नया समझने के लिए। वह शांति पूर्वक, धैर्य के साथ कहीं भी किसी भी जगह रह लेगा और बसर कर लेगा। लेकिन एक पर्यटक बिना शोर-शराबे के नहीं रह सकता। दरअसल पर्यटन ने सारे संसार का नक्शा बिगाड़ दिया है। उसे चाहिये अय्याशियां और हर तरह के व्यंजन। बैंकाक हो, मकाऊ हो, मनीला हो या दुबई आज इसीलिए बदनाम हैं। लेकिन वहां की सरकारें इसे अच्छा समझती हैं। यही हाल अपने देश में होता जा रहा है। पर राज्य सरकारें पैसों के लालच में पर्यटकों को लुभाने के लिए वह सब करती हैं जिनसे वहां की जलवायु प्रभावित होती है और संस्कृति का ढांचा बिगड़ता है। हमारे देश में बाघों को बचाने के लिए टाइगर प्रोजेक्ट की स्थापना उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1971 में कपूरथला के महाराजा ब्रजेंद्र सिंह की अगुआई में की थी। उसे राज्य सरकारों ने पैसों के लालच में चौपट कर डाला है। जिम कार्बेट जैसा अभयारण्य इन्हीं पर्यटकों की बेशुमार आवाजाही से खत्म होता जा रहा है। यदि जिम कार्बेट को बचाना है तो केंद्र सरकार इसे अपने हाथों में ले ले और इसे अफसरों और धनाढ्य पर्यटकों के लिए सैरगाह न बनाए। यहां वही आ सकें जिनकी वाइल्ड लाइफ में दिलचस्पी हो वर्ना उन्हें गेट से ही बाहर कर दिया जाए। इसके लिए जिम कार्बेट के हर प्रवेश द्वार पर सुशिक्षित और प्रशिक्षित लोग रहें जो पर्यटकों को अंदर प्रवेश की अनुमति तभी दें जब वे खुद उनके संयम से संतुष्ट हो जाएं। विडंबना है कि उत्तराखंड की सरकारें जिम कार्बेट का व्यवसायीकरण करे डाल रही है। इस पर अंकुश बहुत जरूरी है। हिमालय की तराई में शिवालिक पहाड़ियों के आसपास का सारा जंगल रामगंगा के दोनों तरफ लंबी-लंबी घास के जंगलों से घिरा है। इन्हीं घास के जंगलों में बाघ रहता है। सूर्य की रोशनी उसके शरीर में लंबी घास के बीच में से आती है। इसीलिए बाघ के शरीर में चारों तरफ लाइनें होती हैं। असल में जंगल के कुछ कायदे-कानून होते हैं उन्हें हमें फॉलो करना चाहिए। किसी भी अभयारण्य में हथियार लेकर अथवा कोई मादक पदार्थ लेकर नहीं जा सकते। अभयारण्य का मतलब ही है कि हम वाइल्ड लाइफ के बीच जा रहे हैं। यह उनका घर है इसलिए हमें उनकी सुविधा-असुविधा का ख्याल रखना चाहिए। हम वहां जंगल में गेस्ट हाउस के बाहर कुछ खाएं-पिएंगे नहीं। कोई पॉलीथीन नहीं इस्तेमाल करेंगे और कोई चीज़ फेकेंगे नहीं। न ही हम वहां शोर शराबा अथवा मोबाइल इस्तेमाल करेंगे। हर रिजर्व फारेस्ट या अभयारण्य का हाल यह है, कि उन्हें शहर का कूड़ादान बना दिया गया है, वे बस धनी-मानी लोगों के उपभोग की जगह बन गए हैं। यहां तक कि शिवपुरी के माधव राष्ट्रीय उद्यान में तो अब एक भी जंगली जानवर नहीं बचा। वहां की झील के मगरों का शिकार होता है। राजाजी नेशनल पार्क को हाथी तस्करों और सागौन माफिया ने खत्म कर दिया है। प्रकृति के अंधाधुंध दोहन का ही नतीजा है कि जिम कार्बेट के अंदर अब वैसा सन्नाटा नहीं रहता जैसा कि आज से बीस साल पहले था। इसकी वजह है हम प्रकृति के साथ अपना आध्यात्मिक जुड़ाव नहीं कायम कर पाते और उससे हमारा तादात्म्य महज रस्मी होकर रह गया है। आज कौन जाता है जिम कार्बेट? वह नहीं जिसकी वाइल्ड लाइफ में दिलचस्पी है बल्कि वह जाता है जो सक्षम है और जो मेट्रो की आपाधापी से दूर कुछ दिन जाकर अलग किस्म की मस्ती करना चाहता है। नतीजा, हम प्रकृति के साथ रहकर अपना आराम तो कर लेते हैं लेकिन प्रकृति और उसके जीव-जंतुओं का विनाश कर आते हैं। प्रकृति के साथ रहना है तो उसकी संस्कृति का और उसकी विविधता का आनंद लेते हुए उसके साथ समरसता का

तब ही रहेगा जलजले से महफूज अपना घर

दरअसल आम आदमी को भूकंप नहीं, निर्माण की गरीबी मारती है। जिन देशों में नियमित भूकंप आते हैं, उन्होंने भूकंप के साथ जीना सीख लिया है। भारत का 57 फीसदी इलाका भूकंपीय दृष्टि से खतरनाक व संवेदनशील क्षेत्र में आता है। देश में 85 फीसदी मकान राज-मिस्त्रियों द्वारा बनाये गये हैं जिसमें सामान्य ईंट और सीमेंट से निर्माण हुआ है। जिनमें भूकंपरोधी तकनीक का उपयोग नहीं होता। हर भूकंप आने पर हो-हल्ला होता है। फिर जो इंसान को भूलने का गुण ईश्वर ने दिया है, उसके चलते हम भूल जाते हैं। तंत्र व मीडिया भी भूकंप के दिनों में सक्रिय दिखता है। विडंबना है कि देश में पर्याप्त भूकंपरोधी ज्ञान होने के बावजूद उसका इस्तेमाल आम निर्माण में नहीं होता है। कैसे कम लागत में भूकंपरोधी घर बनाये जा सकते हैं, इस मुद्दे पर केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक से हुई बातचीत के अंश :-

भारतीय भू-भाग का आधे से अधिक इलाका सिसमिक जोन चार व पांच के अंतर्गत आता है जिसमें भूकंप की दृष्टि से खतरनाक व संवेदनशील क्षेत्र भी शामिल है। भूकंप की ज्यादा संभावना इसलिए है कि इंडियन प्लेट यूरेशियन प्लेट की ओर खिसक रही है। पूरी हिमालयन बेल्ट इसके अंतर्गत आती है। इंडियन प्लेट 47 एमएम प्रतिवर्ष की दर से स्लाइड कर रही है ,यूरेशियन प्लेट ऊपर की तरफ। पचास मिलियन साल पुराना है हिमालय क्षेत्र। इसके खिसकने की वजह से इंडियन प्लेट में हीट पैदा हो रही है। यहां एक फॉल्ट भी स्थित है। हीट निकलती है तो भूकंप का रूप ले लेती है। अत्यधिक दबाव से ऊर्जा रिलीज होती है। धरती में बड़ा कंपन पैदा होता है। जब धरती हिलती है तो हम उसे जलजला, भूकंप या पौराणिक धारणा के अनुसार शेषनाग का हिलना बताते हैं। यह कंपन रेंडमली एक्स वाई डायरेक्शन में होता है। इस पर इंसान का कोई कंट्रोल नहीं होता। जहां ऊर्जा निकलती है उसे एपिसेंटर कहते हैं। जिस स्थान पर होता है उसे फोकल प्वाइंट व जितनी गहराई पर होता है उसे फोकल डेप्थ कहते हैं। आसपास की भूमि कंपित होती है। ज्यादा गहराई हो तो नुकसान कम होता है। कम गहराई हो तो तबाही स्ट्रक्चर की ज्यादा होगी। यदि स्थान चट्टान वाला होगा तो डेमेज ज्यादा होता है।हमें पता है भूकंप तबाही का वाहक है। उसे आना ही है। लेकिन कब आयेगा निश्चित पता नहीं है। उसका आना रोक नहीं सकते। एक प्राकृतिक आपदा है। इंसान इतना ही कर सकता है भवन, पुल व सार्वजनिक निर्माण ऐसे बनाये कि कम से कम नुकसान हो। यानी भूकंपरोधी प्रावधान लागू किये जाएं। हम योजना बनाएं। हम डिजाइन बनाकर उसे मेंटेन रखें। बचाव के लिये भूकंपरोधी संरचना बनानी चाहिए। आज भारत में भूकंपरोधी निर्माण के अच्छे मानक भी हैं -आईएस 1893, 1930, मेसनरी आईएस 436 मानक हैं। अब प्रश्न है कि मानकों का कितनी सावधानी से पालन होता है। इसके अनुपालन का दायित्व राज्य सरकारों व स्थानीय निकायों का है। दरअसल हमारे पास ज्ञान है मगर ज्ञान के क्रियान्वयन की कमी है। मानकों के अनुपालन में कमी है।वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, देश में 325 मिलियन घर हैं। विडंबना यह है कि इनमें 85 प्रतिशत चिनाई वाले मकान हैं। जो स्थानीय स्तर पर उपलब्ध ईंट व सीमेंट से बने हैं। इनकी दीवारें ऊपर से लोड बेयरिंग तो हैं लेकिन भूकंप आने की स्थिति में अच्छी नहीं हैं। दरअसल, इनमें ईंट की ताकत व सीमेंट जुड़ाव कम है। ब्रिटल मेटिरियल है। ये इमारतें वर्टिकल लोड की स्थिति में तो अच्छा बिहेव करती हैं। लेकिन भूकंप आने पर हॉरिजेंटल लोड नहीं ले पातीं। पहले लोग चिनाई में सरिया डालते थे, कहीं लकड़ी या बांस डालते थे। लेकिन अब कॉमन प्रैक्टिस में प्रयोग नहीं करते हैं। कमोबेश भारत व दुनिया के सभी देशों में यही प्रवृत्ति देखने में आती है। ये सर्वविदित है कि भूकंप आयेगा। तो उसमें ऐसे मकानों का धराशायी होना स्वाभाविक है। अब चाहे यह तुर्की-सीरिया का 7.8 तीव्रता का हो या नेपाल में आया पांच मेग्नीट्यूड वाला भूकंप, नुकसान स्वाभाविक है। दरअसल, भारत तथा अन्य देशों में ज्यादा जोर मेसनरी बिल्डिंग पर ही दिया जाता है। इसकी असली वजह है कि निर्माण में लगने वाला मैटेरियल लोकल स्तर पर उपलब्ध होता है। जिसके डिजाइन व निर्माण के लिये इंजीनियर के पास जाने की जरूरत नहीं होती है। स्किल के रूप में इसे बनाने

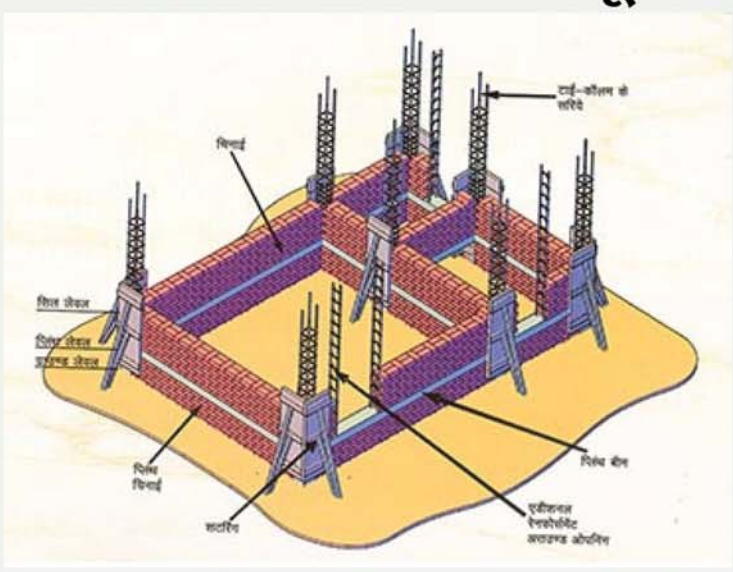

वाला राज मिस्त्री सहज उपलब्ध है। लेकिन हमें इसके निर्माण का पूरा दायित्व कारीगर पर नहीं डालना चाहिए। उन्हें भवन निर्माण तकनीकी की जानकारी नहीं होती। वे बिना नॉलेज के घर बनाकर चले जाते हैं। उन्हें भूकंप के समय मकान के व्यवहार की जानकारी नहीं होती है। तो निश्चित रूप से वे 85 फीसदी मकान बड़े भूकंप में गिर ही जायेंगे जिनमें भूकंपरोधी तकनीक नहीं उपयोग की गई। जबकि ध्यान देना जरूरी है कि मकान बनाने में भूकंपरोधी तकनीक का उपयोग हो।कमोबेश यही स्थिति आरसीसी से बनने वाले फ्रेम स्ट्रक्चर की है। हम पहले सीमेंट के कालम बनाते हैं फिर उसके साथ दीवार लगाते हैं। ज्यादातर मल्टी स्टोरी बिल्डिंग ऐसे ही बनायी जाती हैं। दीवारें भूकंप आने पर आरसीसी स्ट्रक्चर से अलग हो जाती हैं। जबकि इसके लिये भूकंपरोधी प्रावधान मौजूद हैं। बस थोड़ी स्किल लगती है। हम भवन निर्माण में लगने वाली सामग्री की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते। कहीं सरिया लाल रंग वाला होता है। निर्माण कार्य में क्वालिटी कंट्रोल महत्वपूर्ण होता है। इसकी कमी के कराण ये बिल्डिंगें गिरी हैं टर्की में, नेपाल में, गुजरात में भी। निर्माण के बाद भी गुणवत्ता की देखभाल की जरूरत होती है।दरअसल, भूकंपरोधी निर्माण के लिये हमें मेसनरी व आरसीसी फ्रेम के बीच का रास्ता अपनाना है। ताकि कम खर्च में मकान की पर्याप्त सुरक्षा हो सके। अन्यथा तुर्की जैसा हश्र होगा कि पूरी बिल्डिंग गिर गई। सामान्य चिनाई में देखने में आता है कि भूकंप के बाद दो दीवारें अलग हो गई। कभी छत गिर जायेगी। या दीवार में क्रेक आ जायेंगी। जिसकी असली वजह है कि 85 फीसदी घरों में से 67 प्रतिशत चिनाई वाले हैं। कुछ आरसीसी वाले तथा कुछ कच्चे घर हैं।

हमें इस स्थिति में बीच का रास्ता निकालना है। ऐसा निर्माण जो सुरक्षित भी हो और उसमें लोकल मेटेरियल का उपयोग हो सके। उदाहरण के रूप में देखें कि एक बहुत पुराना मकान है जिसे पेड़ ने आजू-बाजू से जकड़ लिया है। इस मकान को बड़ी मशीन से भी नहीं हिलाया जा सकता। लेकिन यदि मकान सामान्य चिनाई का है तो वह हल्के झटके में हिल जायेगा। उसकी लोड बियरिंग क्षमता खत्म हो जायेगी। अंततः वह गिर जायेगा। इसी सिद्धांत के आधार पर भूकंपरोधी तकनीक को मूर्त रूप दिया गया है। इसमें दीवार के कोनों के पास कंक्रीट व हल्के सरिये का उपयोग किया जाता है। जो चारों तरफ से मकान को जकड़ लेते हैं। उसमें भूकंप आने पर क्रेक तो आ सकते हैं लेकिन मकान धराशायी न होगा। ऐसे ही जैसे दर्द होने पर हम टेरामाइसिन या पैरासिटामोल की दवा लेते हैं। भूकंप के मामले में दर्द की दवा सरिया है। भूकंप आने पर सरिया मुड़ सकता है लेकिन मकान को गिरने नहीं देगा। हॉरिजेंटल कंपन आने पर गिरेगा नहीं।दरअसल, पहले बीसीआरआई में इसे भारतीय वैज्ञानिकों व इंजीनियरों ने बनाना शुरू किया, लेकिन तब इसका इंजीनियरिंग दृष्टि से प्रमाणीकरण नहीं हुआ था। दरअसल हमने 7.8 से अधिक शक्ति वाले भूकंप पेरू, अल्सल्वाडोर, मैक्सिको व चिली में देखे। तब 8 मैग्नीट्यूड के भूकंप में भी इस तरह की बिल्डिंग ने अच्छा प्रदर्शन वर्ष 1985 व 1988 में किया। हालांकि उसमें परंपरागत अनुभव था, इंजीनियरिंग ज्ञान नहीं। केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान ने मकानों की भूकंपरोधी 'कन्फाइंड तकनीक' की सफलतापूर्वक टेस्टिंग की। आप घर की चिनाई पर हर कोने पर चार बाई दस एमएम सरिये का ढांचा खड़ा करते हैं। चार फुट की चिनाई पहले करते हैं। उसके बाद में किनारों पर धाड़े छोड़ते हैं। पहले आधा इंच छोड़ा जाता था, अब हमने एक इंच के धाड़े छोड़ दिये। जिसमें कंक्रीट भर दी गई ,जो दीवार को मजबूती देता है। इसके दो तरफ पट्टी लगाई गई। जो चारों तरफ से दीवार को जकड़ लेगा। सब मजबूती से एकजुट हो गए। एक तरह से यह आरसीसी फ्रेम वाला लगने लगेगा। नई तकनीक में ये सब मिलकर ताकत का काम करते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि इसमें स्थानीय मेटेरियल होता है। इसमें सामान्य ईट के अलावा फ्लाई ब्रिक, स्टोन ब्रिक या कंक्रीट ब्लॉक का इस्तेमाल चिनाई में किया जा सकता है। हर कोने में सरिया चार बाई दस इंच का लगाया जाता है। निर्माण को तीन मीटर बाई तीन मीटर ऊंचा बना दिया। खिड़की व दरवाजे के ऊपर लेंटर लेवल बनाया जाता है।हमने कालांतर लैब में कन्फाइंड मेसनरी तकनीक के टैक्नीकल टेस्ट किये। इसकी लोड लेने की क्षमता की जांच की गई। इसने भूकंप की शक्ति के दबाव में लचीला व्यवहार किया है, बिना ज्यादा नुकसान किये। एक प्रयोग में सामान्य चिनाई के मुकाबले 'कान्फाइंड मेसनरी' से निर्मित निर्माण ने करीब 350 प्रतिशत अधिक लोड लिया। इसका प्रभाव दोनों मानकों पर अच्छा रहा। इसके आधार पर आगे रिसर्च एडं डेवेलपमेंट का काम किया गया। इस पर कोड के प्रावधान पास हुए। आईएस 17848 'कन्फाइंड मेसनरी' वर्ष 2022 में अप्रूवल के बाद भारतीय मानकों में शामिल हो गया। इसको विशेषज्ञों की कमेटी के सामने साबित किया गया। अब कोई भी बेहिचक निर्माण में इसका उपयोग कर सकता है।दूसरी बात ये है कि आप आम आदमी के हिसाब से सवाल कर सकते हैं कि परंपरागत निर्माण के मुकाबले इसकी कीमत कितनी अधिक बैठती है। जहां तक आरसीसी तकनीक से बिल्डिंग निर्माण का प्रश्न है तो ये पाया गया कि उसके मुकाबले चालीस प्रतिशत कम लागत में बन जाता है। सामान्य चिनाई वाले निर्माण के मुकाबले पांच प्रतिशत अधिक लागत आती है। महत्वपूर्ण यह है कि सामान्य निर्माण की लागत की दृष्टि से पांच अधिक होने पर 350 अधिक प्रतिशत भूकंपरोधी ताकत बढ़ती है। ये तकनीक लोकल उपलब्ध संसाधनों से संभव है। इसमें कंस्ट्रक्शन सामग्री, स्किल, सोशल कल्चर की स्वीकार्यता है। वैसे भी आज हर आदमी का शौक है कि निर्माण आरसीसी फ्रेम स्ट्रक्चर जैसा लगे।

दरअसल, 'कन्फाइंड मेसनरी' से निर्माण की तकनीक से घर बनाने की विधि आम निर्माण की तरह ही सामान्य बुनियाद तैयार करके होती है। पहले पीसीसी डाला जाता है। हर कोने में 4 बाई 10 के धाड़े छोड़े जाते हैं। प्लेंथ लेवल पर बीम डाली जाती है। स्टेप बाई स्टेप बगल में चिनाई को बढ़ाना या उठाना होता है। पहले कंक्रीट की आरसीसी दीवार बना इसे सुरक्षित किया जाता है। यह तकनीक तीनों निर्माण शैलियों की तुलना में ज्यादा भूकंपरोधी ताकत वाली है। निर्माण में सीक्वेंस चेंज होता है। आरसीसी के मुकाबले सामग्री कम लगती है। लागत कम होने के साथ ही लाभ ज्यादा है।

भवन निर्माण के लिये जरूरी है कि सामग्री की गुणवत्ता कैसी है। सरियों को कैसे बांधना हैं। प्लास्टर कैसा है। सरिया वाटरप्रूफ होना चाहिए। कम लागत, कम तकनीक से सुरक्षित घर मिलता है। इंजीनियर को पैसे नहीं देना। इस तकनीक में छत नहीं, दीवार लोड लेगी। भारत में निर्माण के वक्त धारणा रही है कि भूकंप आने पर छत लोड लेती है। इसके लिये मोटा सरिया लगाया जाता था। मिस्त्री कह देता था कि उसने पचास हजार मकान बनाये हैं। इसके अलावा यह भी जरूरी है कि भूमि कैसी है, बिल्डिंग लेवल ग्राउंड कैसा है। पहाड़ों में निर्माण ढलान पर नीचे की ओर नहीं होना चाहिए। ऐसे में यदि तेज बरसाती पानी आयेगा तो बिल्डिंग ले कर चला जायेगा। या फिर फाउंडेशन में घुसकर बुनियाद को कमजोर कर देगा। बिल्डिंग के लिये महत्वपूर्ण है कि वह तेज ढाल पर न बनी हो। ज्यादा मंजिल न बनायी जाएं। किसी अनुभवी इंजीनियर से राय लें, केवल मिस्त्री पर निर्भर न रहें। साथ ही अप्रूव्ड टेक्नीक को अपनाएं।

यदि मानक सावधानियां बरती जाती हैं तो हम भूकंप जोन चार में हों या पांच में, सुरक्षित ही रहेंगे। सुरक्षा के लिये जरूरी है कि पांच महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रहे। निर्माण में स्थानीय सामग्री प्रयोग करें, मकान फंक्शनल हो, गर्मी-सर्दी का ज्यादा प्रभाव न हो, तेजी से निर्माण हो सके, आरामदायक हो तथा दिखने में अच्छा हो। दरअसल,हर साल भूकंप आते-जाते हैं। भगवान ने एक चीज दी है भूलने की आदत। लोग थोड़े दिनों में भूकंप को भूल जाते हैं। जब भूकंप आता है तो मीडिया में भी खूब चर्चा होती है। लोग सरकार पर भी अनदेखी के आरोप लगाते हैं लेकिन अपनी गलती को नहीं देखते। एक मॉंजिल पास होती है, चार बना देते हैं। सरकार भी जनाक्रोश से बचने के लिये मुआवजा बांट देती है और पुनर्वास की बात करती है। दो-चार भूकंपरोधी स्कूल व अस्पताल बना देती है। 'सब चलता है' का दृष्टिकोण हावी हो जाता है। लोग कहते हैं कि मैं बना लूं तो क्या फर्क पड़ेगा, पड़ोसी ने तो नहीं बनाया।जमीन न खरीद पाने वाले लोग अब फ्लैट खरीदकर घर का सपना पूरा करते हैं। लेकिन वे अंधेरे में रहते हैं कि बहुमंजिली इमारत में भूकंप से बचाव के प्रावधान हैं कि नहीं। जरूरी है कि खरीदने जाने पर बिल्डर से स्ट्रक्चर का डिजाइन मांगें। पूछें कि क्या भूकंपरोधी प्रावधान लागू हैं? इंजीनियर की सलाह लें। वैसे कायदे से तो बहुमंजिली इमारतों का डिजाइन व क्वालिटी कंट्रोल मानक संस्थाओं से होना चाहिए। फिर भी क्वालिटी कंट्रोल की जानकारी लें। एक व्यक्ति से बात न बने तो सभी लोग मिलकर जानकारी मांगें। वैसे तो सरकार, बिल्डर बिल्डिंग के डिजाइन, निर्माण सामग्री के लिये जवाबदेह हैं,लेकिन फिर भी मेंटेनेन्स एजेंसी, रेगुलेटरी एजेंसी, फाइनेंस करने वाली संस्था, बीमा करने वाले विकास प्राधिकरण की सामूहिक जिम्मेदारी बनती है। सवाल ये है कि पिछले पचास साल से चंडीगढ़ को एक मानक शहर के रूप में दिखाने का सिलसिला जारी है। हम अब तक सैकड़ों चंडीगढ़ क्यों नहीं बना पाये!भूकंपरोधी तकनीक लागू करने के बाबत सरकारी एजेंसियां भी गंभीर नहीं रहती। दरअसल, देश में टेक्नो लीगल रिजीम होनी चाहिए। आपको पता है भूकंप आएगा। क्या करना है। डिजाइन, कोड व इंजीनियरिंग ज्ञान उपलब्ध है। दिक्कत यह है कि एजुकेशन नहीं है, डिप्लोमा व डिग्री वालों को भूकंप के बारे में पढ़ाया नहीं जाता। जो जेई नक्शा पास करता है, उसे भूकंपरोधी तकनीक का नहीं पता। व्यक्ति नक्शा पास कुछ कराता है बनाता कुछ है। ऑनर बाद में बदलाव करता है। हमारे पास कोई संस्था नहीं है जो उसकी जांच करे कि जैसे नक्शा था क्या वैसे मकान बना है। जांच का कोई मैकेनिज्म नहीं है। जो प्रावधान कागज में हैं, वे धरातल पर नहीं आते। सही बात तो ये है कि आप खुद को धोखा दे रहे हैं। कुदरत एक झटके में सारी गलती निकाल देती है, कौन कितना सही हड्डे कौन कितना गलत है। कुदरत प्राइम मिनिस्टर से लेबर तक का, हिंदू-मुसलमान का भेद नहीं करती।

बदलाव जो दें घर में ठंडक का अहसास

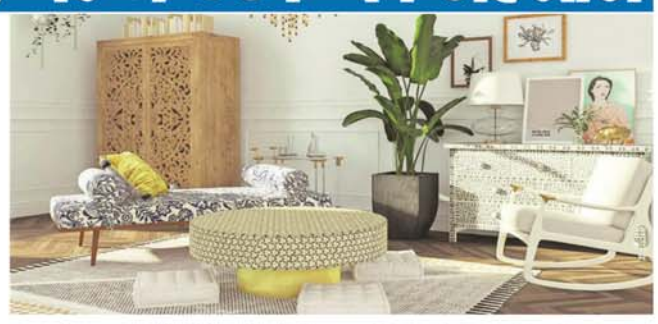

गर्मियों में यदि इंटीरियर की बात की जाये तो घर का इंटीरियर इस तरह का होना चाहिए जिसे देखकर आपको सुकून सा महसूस हो। ऐसा न हो कि भड़कीला, आंखों को चुभने वाला इंटीरियर आपको परेशान करने लगे। क्योंकि आपने देखा होगा कि समर्स में कुछ भी चीज लाइट या फिर हल्के रंगों वाली आपको शांतिदायक अहसास दिलाती है। तो क्यों न घर के इंटीरियर में कुछ ऐसी चीजें शामिल की जायें जिनसे घर को कूल लुक मिले। गर्मी के मौसम के अनुकूल रहे घर का अंदरूनी भाग, जानिये ऐसे उपाय - अगर आपको लगता है कि आपने विंटर के हिसाब से थोड़े गहरे रंग के पर्दों को घर में जगह दे रखी है तो उनमें थोड़ा बदलाव लाएं। उनकी जगह हल्के रंग के या पेस्टल रंग के पर्दों को जगह दें। ये पर्दे कॉटन बेस्ड हैं तो और भी अच्छा रहेगा। साथ ही लाइट वेटेड फैब्रिक में हों तो यह तो बेहतरीन लगेगा क्योंकि इनसे घर में रोशनी और खुलेपन का अहसास रहेगा। गहरे रंग के परदे आपको गर्मियों में चुभते-से लगते हैं। इसके विपरीत हल्के रंग के पर्दे कूल-कूल अहसास देते हैं। घर में पेंट करवाना आसान कार्य तो नहीं है लेकिन कुछ समय बाद जरूरी भी हो जाता है। ऐसे में यदि आपको पेंट करवाना है तो हल्के रंगों को दीवारों पर करवाएं क्योंकि लाइट कलर आपको ठंडक का अहसास देते हैं। आपको गर्मी भी नहीं लगती है। अगर घर की चार दीवारी पर हल्का रंग होगा तो कुछ भी महसूस नहीं करेंगे। हल्के रंग में क्रीम तो बेस्ट ऑप्शन है, इससे घर खुला-खुला महसूस होता है। साथ ही आपको वॉलपेपर लगवाने हैं तो उन्हें भी आप ज्यादा भड़कीले नहीं लगवाएं, पेस्टल कलर्स को ही ध्यान में रखना चाहिये। हालांकि समर-2023 में नेवी ब्लू और गोल्डन रंग चलन में हैं। आपने देखा होगा कि लोग घरों में कई तरह के सोफों के कवर इस्तेमाल करते हैं। मैला होने से बचाने को, रंग संयोजन-संतुलन या रंगों में विविधता लाने को ये कवर सोफों के ऊपर डालते हैं। तो आप इनमे हल्के रंगों का इस्तेमाल करें। इस समर सीजन में यूं भी कलर कंट्रास्ट का ट्रेंड है। ऐसे में कुशन पर पाम या पाइनएप्पल प्रिंट फबेंगे। क्योंकि यदि आपके सोफे का कलर डार्क है तो उन पर लाइट कलर के सोफा कवर लगे हुए अच्छे लगेंगे। आपको उनको देखकर अच्छा पॉजीटिव फीलिंग आएगी। इसी तरह आप कुशन कवर खरीदते समय भी ध्यान रखें कि हल्के रंग के ही खरीदें। ये सोफे पर लगे हुए ताजगी का अहसास देंगे। यदि आपको गर्मी में घर में सकारात्मकता चाहिए तो इसके लिए घर को लाइट से प्राकृतिक लुक दें। जिससे हल्की-हल्की रोशनी आपके अंदर सकारात्मकता को जन्म दे। घर के अंधेरे कोनों में घुसने की कोशिश न करें। प्रकाश की ऐसी व्यवस्था रखने से आपको घर में कूल अहसास होगा व डिप्रेशन भी महसूस नहीं होगा। घर में फूल और पौधों को जरूर जगह दें क्योंकि ये गर्मी में ठंडक का अहसास देते हैं। आपको गर्मी महसूस नहीं होगी। साथ ही ये एयर प्यूरीफायर का काम करते हैं। कुछ सुंदर हर्बल पौधों के गमले भी रख सकते हैं। जिससे घर में ताजा हवा आती है। यह भी ध्यान रखें कि घर के अंदर और बाहर दोनों जगह अलग-

सबक ले रचें स्नेहिल रिश्तों का संसार

स्नेह, साथ और भविष्य के सपनों की बुनियाद पर खड़े रिश्ते का बिखरना तकलीफ तो देता ही है। ऐसे रिश्तों के टूटने से पल भर में आज और आने वाले कल से जुड़ी कई योजनाएं ध्वस्त हो जाती हैं। ऐसे में साथ, स्नेह और संबल के मोर्चे पर बिखराव भी लाजिमी है पर बहकने की गुंजाइश भी इसी मोड़ पर होती है। मन के भटकाव की स्थितियां बन जाती हैं। गलत फैसले करने के हालात पैदा हो जाते हैं। पुराना साथ छूटने के बाद नये रिश्ते का सही चुनाव करने में चूक जाने की स्थितियां बन जाती हैं। खासकर लंबे समय तक चले किसी संबंध जैसे प्रेम, शादी या गहरी दोस्ती का टूटना अकेलापन, तनाव और भावनात्मक बिखराव आपके हिस्से कर जाता है। इस मोड़ पर जरा ठहरिए, सोचिए और फिर आगे बढ़िए। दरअसल, एक रिश्ते में टूटन और बिखराव आने के बाद नए इंसान के साथ रिलेशनशिप बनाने को रिबाउंड रिलेशनशिप कहा जाता है। गौरतलब है कि रिबाउंड का अर्थ ही रिकवर करना या बाउंस बैक करना होता है। यानि ऐसा जुड़ाव जो पीड़ा से रिकवर करने में काम आता है। जीवन में आगे बढ़ने के रास्ते पर बाउंस बैक करना मददगार बनता है। आमतौर पर लोग प्रेम सम्बन्धों में ब्रेकअप होने पर इस नये जुड़ाव की ओर मुड़ते हैं। रिबाउंड रिलेशनशिप संबल, स्नेह, सलाह और सहयोग पाने के लिए उस दौर से निकलने और निकालने वाला रिश्ता कहा जा सकता है। पर क्या यह इतना आसान है? बिलकुल नहीं। जब खुद आपकी मनःस्थिति ही किसी पर विश्वास करने या न करने के मोर्चे पर डिगी हुई हो, तब नये रिश्ते को परखने-समझने में गलती होने की गुंजाइश सबसे ज्यादा होती है। मन कभी पुराने रिश्ते की यादों से जूझता है तो कभी नये जुड़ाव की जद्दोजहद में उलझता है। इस समय ठहराव जरूरी है। कुछ समय के लिए रुकना और बीते कल को लेकर सोचना आवश्यक है। साथ ही भावी जीवन की रूपरेखा बनाने के लिए भी थोड़ा ठहर-संभलकर ऊर्जा जुटाना जरूरी है। इसीलिए रिबाउंड रिलेशनशिप की राह पकड़ने से पहले थोड़ा ठहरकर आगे बढ़ें। संयत मन और सधे दिमाग से किसी के साथ जुड़ने

झरगांव तेतलपारा में धूमधाम से मनाया गया वट सावित्री का पर्व, पति की दीर्घायु के लिए सुहागिनों ने रखा निर्जला व्रत

3संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद- जिला मैनपुर विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत झरगांव तेतलपारा में शुक्रवार को वट सावित्री व्रत धूमधाम से मनाया गया। हिन्दू धर्मावलंबी महिलाओं ने व्रत रखकर सुहाग के कल्याण एवं रक्षा की कामना की। व्रत को लेकर प्रात- से ही महिलाओं का हुजूम शहर के विभिन्न बरगद पेड़ के नीचे दिखने लगा था वैदिक मंत्रोच्चार के बीच महिलाओं ने पंचोपचार विधि से वट वृक्ष का पूजन किया एवं वृक्ष में कच्चा सूत बांधकर परिक्रमा की। लाल-पीली साडियों में सजी महिलाओं ने बताया कि वे इस पर्व को लेकर आज व्रत धारण करेंगी। उन्होंने पूजन के उपरांत सदा-सुहागिन रहने की मनौती मांगी है

।वट सावित्री की पूजा, पति की दीर्घायु व संतान प्राप्ति के लिए की गई पूजा अर्चना- सुहागिनों ने इस व्रत के संदर्भ मे जनपद पंचायत सदस्य श्रीमती लक्ष्मी बाई पटेल ने बताया कि पुरातनकाल में सती सावित्री ने इस व्रत को किया था तथा सदा-सुहागन रहने की मंगलकामना की थी। व्रत के परिणामस्वरूप उनके पति की उम्र पूरी हो जाने के बाद भी यमराज ने पुन- जीवनदान दिया था। तबसे यह व्रत पृथ्वीलोक पर प्रचलित है और सुहागिन महिलाएं इस व्रत को धारण करती रही हैं। व्रत को लेकर दिनभर सड़कों पर रंग-बिरंगे परिधानों में सजी महिलाओं की भीड़ देखी गई। विदित हो कि वट सावित्री का पर्व हिंदू धर्म का महत्वपूर्ण त्यौहार है। इस दिन परंपरा अनुसार सुहागिनें स्त्री पुराने वट (बरगद) वृक्ष की पूजा कर उसे पीले धागे से बांधकर उसका फेरा लगाती हैं। पुराणों के अनुसार वट सावित्री के ही दिन सती ने यमराज से अपने पति के प्राण बचाकर लाए थे। वट सावित्री का त्यौहार सुहागिन स्त्रीयों के द्वारा काफी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। वट सावित्री के पर्व के लिए नगर से लेकर ग्रामीण इलाकों तक महिलाओं में उत्साह रहा। गांव के प्राथमिक शाला के पास, कई पुराने बरगद के पेड़ों के पास सुबह से महिलाओं ने पहुंचकर वट वृक्ष में कच्चे सूत को लपेटते हुए 12 बार परिक्रमा की अखंड सुहाग की कामना की। पारंपरिक व्रत को पूरे विधि विधान-लगन के साथ करने के साथ महिलाओं ने वट वृक्ष की पूजा की

कल्पलता सिंह ने बतलाया—क्या हैं व्रत का महत्वअपने पति के प्राण यमराज से वापस लेने वाली देवी सावित्री भारतीय संस्कृति में संकल्प और साहस का प्रतीक हैं› यमराज के सामने खड़े होने का साहस करने वाली सावित्री की पौराणिक कथा भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रही है। सावित्री के दृढ़ संकल्प का ही उत्सव है वट सावित्री व्रत। इस व्रत की उत्तर भारत में बहुत मान्यता है,

इस दिन बरगद के वृक्ष की पूजा कर महिलाएं देवी सावित्री के त्याग,पतिप्रेम एवं पतिव्रत धर्म की कथा का स्मरण करती हैं।यह व्रत स्त्रियों के लिएसौभाग्यवर्धक,पापहारक,दु:खप्रणाशक और धन-धान्य प्रदान करने वाला होता है।जो स्त्रियां सावित्री व्रत करती हैं वे पुत्र-पौत्र-धन आदि पदार्थों को प्राप्त कर चिरकाल तक पृथ्वी पर सब सुख भोग कर पति के साथ ब्रह्मलोक को प्राप्त करती हैं। ऐसी मान्यता है कि वट वृक्ष की जड़ों में ब्रह्मा,तने में भगवान विष्णु एवं डालियों में त्रिनेत्रधारी शंकर का निवास होता है एवं इस पेड़ में बहुत सारी शाखाएं नीचे की तरफ लटकी हुई होती हैं जिन्हें देवी सावित्री का रूप माना जाता है। इसलिए इस वृक्ष की पूजा से सभी मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण होती हैं। इस कार्यक्रम में शामिल माताओंलक्ष्मी पटेल, अनिता पटेल, परमिला नागेश, हेमकांती यादव, कल्प लता सिंह, कलमा दुर्गा, हेमकांती दुर्गा, द्रोपति नागेश, रामकुमारी नायक, त्रिवेणी चक्रधारी, दिव्या चक्रधारी, दुलारी चक्रधारी, जमुना ध्रुवा, एवं ग्रामीण अनूप पटेल, निरन नायक, जीवन लाल यादव, टिकनेश्वर यादव भजन राम यादव, रविराम यादव, हेमचंद नागेश रिखी राम बीसी, अन्य ग्रामीण उपस्थित रहे।

सड़क हादसे का शिकार हुई भाजपा विधायक रंजना साहू शादी में शामिल होने जा रही थी इस वक्त हुई घटना

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद -जिले से इस वक्त की बड़ी खबर सामने आ रही है. भाजपा विधायक रंजना साहू की गाड़ी पलट गई है. उन्हें आनन-फानन में नजदीकी अस्पताल मैनपुर में भर्ती कराया गया है. जहां उनका इलाज जारी है।मिली जानकारी के मुताबिक रंजना साहू बीजेपी विधायक डमरूधर पुजारी के बेटे की शादी कार्यक्रम में शामिल होने जा रही थी, लेकिन रास्ते में गाड़ी हादसे का शिकार हो गई।बताया जा रहा है कि इस हादसे के उन्हें मामूली चोटें आई है. नेशनल हाइवे में झरियाबहारा के पास हादसा हुआ है. उन्हें मैनपुर के हॉस्पिटल ले जाया गया है. जहां इलाज जारी है.

प्रमोशन में लेटलतीफी के कारण सहायक शिक्षक आंदोलन के राह में

जिला कार्यालय गरियाबंद में धरना प्रदर्शन की तैयारी

संवाददाता हेमचंद नागेश

छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में प्रमोशन कि प्रक्रिया इन दिनों अंतिम चरण में है!वहीं गरियाबंद जिले में प्राथमिक शाला प्रधान पाठक के पदों पर पदोन्नति कि प्रक्रिया विगत 31 अक्टूबर 2022 से शुरू हुई थी !जिसके अन्तर्गत गरियाबंद जिले के अधिकांश सहायक शिक्षकों को काऊसिलिंग के माध्यम से पदोन्नति दे दी गई है !लेकिन जिले के सैकड़ों सहायक शिक्षकों का ये कहकर पदोन्नति में रोक लगा दिया गया है कि शिक्षा विभाग सर्वप्रथम उनकी विभागीय जांच करके उसके उपरांत पात्र शिक्षकों को पदोन्नति करेगी !ज्ञात हो कि चार पांच महीनें बीत जाने के बाद भी जांच पूर्ण नही होने से सहायक शिक्षक सवर्ग ने आक्रोश व्यक्त किया है !आक्रोशित सहायक शिक्षकों ने बताया कि जांच प्रक्रिया एवं पदोन्नति में लेटलतीफी होने के कारण उनके सीनियार्टी को भी नुकसान पहुंचेगा !इतना ही नही बल्कि जिले के कई सहायक शिक्षकों का रायपुर संभाग में उच्च श्रेणी शिक्षक के पदों पर पदोन्नति सूची में भी नाम शामिल है !जिसका पदोन्नति हेतु काऊसिलिंग प्रक्रिया रायपुर में गत 17 मई से प्रारंभ होकर 21मई चलेगा !जिसमें उन्हें विभागीय जांच/परीक्षण अपूर्ण है कहकर काऊसिलिंग में

शामिल होने से वंचित रखा गया है !इसलिए भी सहायक शिक्षकों में भारी आक्रोश देखने को मिल रहा है !आक्रोशित सहायक शिक्षकों ने गत दिनों छत्तीसगढ़ सहायक शिक्षक/समग्र शिक्षक फेडरेशन ब्लॉक इकाई मैनपुर के तत्वाधान में एक बैठक आहूत किया था !जिसमें सहायक शिक्षकों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर पदोन्नति प्रक्रिया में लेटलतीफी को देखते हुए जिला कार्यालय गरियाबंद का घेराव प्रदर्शन करने का रणनीति बनाया हैं !इस संबंध में संगठन के पदाधिकारियों का कहना है कि सहायक शिक्षकों का शिक्षा विभाग में कोई भी मामला लंबित नही है !फिर भी वे जांच के लिए तैयार हैं !लेकिन चार से पांच महीने बीत जाने के बाद भी जांच को आज पर्यंत तक पूर्ण नही किया जा सका है !जिसके कारण उनके वरिष्ठता क्रम में पदोन्नति बाधित हो रही है !जो विभाग के जवाबदार अधिकारियों कि उदासीनता है !तथा इस संबंध में शिक्षकों एवं संघ संगठन के पदाधिकारियों द्वारा जानकारी मांगने पर भी स्पष्ट जवाब भी नही मिल पा रहा है !कि कब परीक्षण पूर्ण करके पदोन्नति प्रक्रिया प्रारंभ कि जायेगी !जिसके कारण गरियाबंद जिले मे पदोन्नति से प्रभावित सहायक शिक्षक संवर्ग धरना प्रदर्शन करने के लिए बाध्य हो गये हैं !ज्ञात हो कि इस रणनीति के तहत आगामी 22 मई को जिलेभर के समस्त सहायक शिक्षक संवर्ग एक बार फिर गरियाबंद जिला मुख्यालय में एकत्रित होकर घेराव प्रदर्शन के लिए जिला प्रशासन को ज्ञापन सौपेंगे !जिसकी जानकारी छत्तीसगढ़ सहायक शिक्षक/समग्र फेडरेशन केपदाधिकारियों ने दी है !जिसमें प्रमुखरूप से जिलाध्यक्ष कुमेंद कश्यप, कोषाध्यक्ष गणेश दूर्गा,प्रवक्ता रासबिहारी नागेश,मैनपुर ब्लॉक अध्यक्ष उमेश श्रीवास,सचिव सुरेश शर्मा,वीरेंद्र बघेल,अजय यादव,जितेंद्र नागेश,जनसिंह सोरी,शेषनारायण तिवारी,सुनील कुमार,वीरेंद्र यादव,लक्ष्मीकांत दूबे,महेंद्र यादव,अशोक मांझी, गजानन बघेल,वेदमल भाठी शंभू मिश्रा,संतराम डोंगरे, बनसिंह नागेश,गजानन बघेल,आदि शामिल रहे !

सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त अलीगढ़ मंडल अलीगढ़ श्रीमती नेहा कटियार जी द्वारा निष्पक्ष कार्रवाई ना करने से फर्जी नियुक्ति पत्रों का खेल जोरों पर

प्रादेशिक मुख्यालय लखनऊ के आदेशों की अवहेलना सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त अलीगढ़ मंडल अलीगढ़ श्रीमती नेहा कटिहार भारत स्काउट और गाइड कर रही हैं।जब उनके संज्ञान में यह लाया गया कि महाविद्यालय में बीएड पंच दिवसीय शिविर में कम से कम प्रशिक्षक की योग्यता सीनियर एचडब्ल्यूबी रियूनियन कोर्स है। तो भी उन्होंने श्रीमती ज्योति भार्गव के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की क्योंकि वह ना तो सीनियर एचडब्ल्यूडी है और ना ही री यूनियन कोर्स। श्रीमती ज्योति भार्गव के विरुद्ध जिला प्रशिक्षण आयुक्त गाइड पद पर फर्जी नियुक्ति प्रकरण में जांच भी चल रही है। यह भी ज्ञात है।प्रादेशिक मुख्यालय लखनऊ की पत्रांक संख्या ञ्जस्-46/1768/2021-22 दिनांक 27 मार्च 2022 पर बीएड शिविर में प्रशिक्षक नियुक्त संबंधी नियम का उल्लेख है।यह प्रार्थनी ने बताया।क्या नियमों की जानकारी सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त अलीगढ़ मंडल अलीगढ़ को नहीं होनी चाहिए?लेकिन बताने पर भी उन्होंने कोई भी कार्यवाही नहीं की। इससे स्पष्ट होता है कि वे निष्पक्ष नहीं है बल्कि उन्हीं का साथ दे रही हैं जिन पर फर्जी नियुक्ति पर प्रकरण में भी जांच चल रही है।प्राइवेट एनजीओ भारत स्काउट और गाइड के मंडल अधिकारी को निष्पक्ष कार्य करना चाहिए या नहीं। जांच आवश्यक है। एक बार नहीं कई बार ऐसा हुआ है। महाविद्यालय के बीएड पंच दिवसीय शिविर में लिखित में ड्यूटी शबनम मैडम की लगाई जाती है। मगर प्रशिक्षण देते हुए श्रीमती ज्योति भार्गव को पाया जाता है। इसको म्यूचल अंडरस्टैंडिंग का नाम दिया जाता है। यह कहा जाता है कि शबनम मैडम को कुछ काम है। यदि उन्हें कुछ काम था तो ड्यूटी लगाई किसने? श्रीमती ज्योति भार्गव जी ने। यह कौन सा खेल शुरू हुआ, सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त अलीगढ़ मंडल अलीगढ़ से पूछा जाना चाहिए।तो क्या प्रादेशिक मुख्यालय लखनऊ किसी को नियुक्त करें और ड्यूटी कोई और दे। ऐसी स्थिति में जवाबदेही किसकी?डॉ शुभिका प्रधानाचार्य राजकीय कन्या इंटर कॉलेज कलाई की ड्यूटी बीएड पंच दिवसीय शिविर में लगाई गई। सरकारी वेतन के साथ-साथ मानदेय भी दिलवाया गया और अन्य सरकारी सुविधाएं भी। अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए बच्चों की पढ़ाई का नुकसान किया गया। माननीय उच्च न्यायालय के आदेश का उल्लंघन जिसमें कहा गया है कि अध्यापन कार्य के समय कोई भी अन्य कार्य नहीं।सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त श्रीमती नेहा कटियार ऐसे सरकारी प्रधानाचार्य और प्रवक्ताओं को लेकर मा0 जिलाधिकारी महोदय कार्यालय अलीगढ़ पहुंची (भारत स्काउट गाइड डीओसी, डीटीसी) जो फर्जी नियुक्ति पत्र पर कार्य कर रहे हैं।टीकाराम कन्या महाविद्यालय में बीएड पंच दिवसीय शिविर में एक बुजुर्ग अस्वस्थ और घायल जिसके शरीर के विभिन्न अंगों में 35 टांके लगे थे, लगभग। प्रादेशिक मुख्यालय लखनऊ के नियम विरुद्ध यह कार्य सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त श्रीमती नेहा कटियार द्वारा किया गया।सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त अलीगढ़ मंडल अलीगढ़ का क्या व्यक्तिगत लाभ है? इसकी भी जांच होनी अति आवश्यक है।

विश्व मे हमारी पहचान सबसे अलग है : गोविंद गावड़े

अपनी राज्यों की विषेशताओं के साथ आए युवाओं का गोवा में स्वागत – प्रो बी के मिश्रा

फोंडा-गोवा (करण समर्थ = आयएनएन भारत मुंबई) भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी व्दारा देश के युवाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से ÷एक भारत; श्रेष्ठ भारत÷, अंतर्गत केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय अधीन आयआयटी गोवा व्दारा तथा आयआयटी मंडी के सहयोग से युवा संगम इस सात दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन मई 2023 महिने में गोवा में किया है। युवा संगम कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए गोवा के कला संस्कृति और युवा कल्याण मंत्री गोविंद गावड़े ने कहा, भारत सरकार की युवा संगम उपक्रम के कारण युवाओं कोदेश की विभिन्न सभ्यता, संस्कृति, विचार धाराओं को देखने-समझने तथा अनुभव करने का मौका मिल गया है। आज विदेशी देशों में वैज्ञानिक प्रगति के कारणों कई क्षेत्रों में हमसे बढ़त हासिल की है । लेकिन फिर भी विश्व मे हमारी पहचान इन सबसे अलग है। हमारी अद्भुत सांस्कृतिक सभ्यता, गरिमामय संस्कृति और गौरवशाली इतिहास से वर्तमान में भी कोई भी प्रतियोगिता कर नहीं कर सकते।

अतिथी देवों भवः संकल्पना पर आधारित इस युवा संगम उपक्रम का उद्घाटन गोवा राज्य के कला संस्कृती तथा युवा कल्याण मंत्री गोविंद गावड़े व्दारा एक भव्य समारोह में किया गया। विशेष अतिथि के रूप में गोवा इंजीनियरिंग महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ कृपाशंकर एम् एस उपस्थित थे। समारोह का आरंभ डॉ दिव्या पद्मनाभन व्दारा गणेश वंदना से किया गया और आयआयटी गोवा के निदेशक प्रो बी के मिश्रा ने युवा संगम उपक्रम में सहभागी विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए गोवा कि विशेषताओ के बारे में अवगत कराया।

आयआयटी गोवा के फोंड़ा स्थित प्रागंण मे आयोजित युवा संगम उपक्रम मे देश के दूरदराज इलाकों से आनेवाले हिमाचल, लड़ाख तथा गोवा राज्यों युवा विद्यार्थीओं को एक-दूसरे के राज्यों में भेंट देकर अद्भुत जानकारी आदान-प्रदान कर व्यक्तित्व विकास करते हुए भविष्य भारत को सक्षम बनाने उद्देश्य से युवा संगम का आयोजन किया गया है। उपक्रम अंतर्गत इस वर्ष हिमाचल प्रदेश तथा लद्दाख से गोवा की

सहभाग है। इस उपक्रम को मार्गदर्शन करते हुए गोविंद गावड़े ने आगे कहां, आप युवा याद रखिए हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पूरे विश्व को संदेश दिया है कि, आज हमारा देश मात्र प्रगतिशील नहीं है लेकिन वर्तमान में भारत प्रगत बन गया है। इसके लिए हमें अपने जीवन की कई सारी चीज़ें पहले से प्लान करनी पड़ेगी। हमे आनंद है कि आज हमारे भारतीय अमेरिकन विकास के प्रमुख भागीदार है, लेकिन हम अपने देश के विकास के लिए कब भागीदार बनेंगे, इसपर हमें सोचना चाहिए। हमें जीवन में कई बार हमे असफलताओं का सामना करना पड़ता है लेकिन फिर भी हमें दृढ़ता से आगे बढ़ना चाहिए। अवसर पर गोवा इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य डॉ कृपाशंकर एम् एस ने, वर्तमान परिस्थितियों में हम सबको एकसाथ मिलकर टिम वर्क में काम करने का महत्व बताया। टिम वर्क से बड़ी-बड़ी मुश्किलों का हल निकल सकता है। प्रौद्योगिकी करण के साथ हमें अपने सांस्कृतिक विरासत को भी संभालना चाहिए।आयआयटी गोवा के निदेशक प्रो बी के मिश्रा ने अपने भाषण में बताया कि, युवा संगम उपक्रम में केंद्र सरकार ने देश के उज्जवल भविष्य में असिम महत्वपूर्ण माने जाने वालीपंचसूत्री तत्व; पर्यटन, परंपरा, प्रगति, परस्पर संपर्क तथा प्राद्योगिकी ज्ञान के आदान-प्रदान को शामिल किया है। आजतक इस उपक्रम में बावीस राज्यों के बारह सौ विद्यार्थियों का सहभाग हुआ है और इस वर्ष युवा संगम उपक्रम में आयआयटी गोवा में अपने दुसरे चरण में सहभागी है। वर्ष 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन से शुरू किया गया युवा संगम उपक्रम कई विशेषताओं के साथ युवा व्यक्तित्व विकास पर केंद्रित किया गया है। जब विद्यार्थि विभिन्न संस्कृतियों से दूसरी जगह आते-जाते है, तो उन्हें संस्कृति, भाषा से परिचय होने का अवसर मिलता है। गोवा राज्य की विशेष सांस्कृतिक विभिन्नता विषेशताओं से भेटकर्ता युवा विद्यार्थीओं को परिचय करने हेतू उनको वास्तविक गोवा दर्शन करवाने का आलेख बनाया है, ऐसा प्रो बी के मिश्रा ने कहा। समारोह को रोचक बनाने हेतू डॉ कृपाशंकर एम् एस के आग्रह पर मंत्री गोविंद गावड़े ने अपने बचपन से राजनीतिक प्रवास के बारे में जानकारी

भाजपा का चलबो गौठान - खोलबो पोल अभियान का आगाज आज से - संदीप शर्मा

गांव के मूलभूत के हजारों करोड़ का दुरुपयोग कर भयंकर भ्रष्टाचार

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद नरवा गरवा घुरवा बारी के फर्जी नारा से भुपेश सरकार में छत्तीसग? को गर्त में डाल दिया है,14 वें और 15 वें वित्त की जो राशि पंचायतों को ग्रामीण मूलभूत के लिए केंद्र सरकार द्वारा दी गयी थी उसका भयंकर दुरुपयोग कर भ्रष्टाचार किया गया है। उक्त आरोप भाजपा प्रदेश प्रवक्ता एवं पोल खोल अभियान के संभागीय प्रभारी संदीप शर्मा ने लगाया है। श्री शर्मा ने आगे बताया कि भुपेश सरकार द्वारा कथित रूप से बनाये गए 9 हजार से अधिक गौठानों में भयंकर अनियमितता कर ग्रामीण जनता के सुविधा के लिए भेजे गए पैसे का बंदरबांट अपने चहेतों में इस सरकार द्वारा की गई है,भ्रष्टाचार को उजागर करने भाजपा द्वारा पूरे 405 मण्डलों में 20, 21, 22 मई को पोल खोल अभियान की जाएगी। जनविरोधी भुपेश सरकार द्वारा कथित रूप से बनाये गौठानों का निरीक्षण कर वास्तविकता का पता लगाने भाजपा कार्यकर्ता गौठानों में जायेंगे और जनता द्वारा पंचनामा बनाने का काम भी करेंगे,इसके लिए पूरे गरियाबंद जिले के 10 मंडल में वरिष्ठ नेताओं को अतिथि

बना कर भेजा जा रहा है।**भाजपा का ÷चलबो गौठान खोलबो पोल÷ कार्यक्रम में आज पहुंचेंगे भाजपा नेता**-प्रदेश एवं जिला नेतृत्व के आह्वान पर दिनांक 20 मई 2023 दिन शनिवार से सुबह 09ः00 बजे छत्तीसगढ़ शासन के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के काले करतूतों को उजागर करने ÷चलबो गौठान खोबो पोल÷ का कार्यक्रम को लेकर चिन्हांकित ग्रामों के गौठान में जाकर भूपेश बघेल के गौठान में हुए घोटालों को उजागर कर आम जन के बीच लाना है और 2023 में छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी के कमल खिलाना है इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एवं नेतृत्व करता भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता संदीप शर्मा एवं प्रदेश महिला मोर्चा के महामंत्री श्रीमती विभा अवस्थी के उपस्थिति में चलबो गौठान खोलबो पोल के कार्यक्रम को लेकर ग्राम चौबे बांधा,बरोड़ा,सुरसबंधा,जेन्जरा के गौठान में कार्यकर्ता सुबह 9ः00 बजे से चिन्हांकित स्थलों से अभियान शुरू होगा मुख्य रूप से उपस्थित रहेंगे चंदूलाल साहू पूर्व सांसद,संतोष उपाध्याय पूर्व विधायक,डॉ राम कुमार साहू पूर्व जिलाध्यक्ष,चंद्रशेखर साहू जिला पंचायत सदस्य रोहित साहू जिला पंचायत सदस्य भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा के जिलाध्यक्ष श्रीमती अंजू नायक,भारतीय जनता पार्टी जिला गरियाबंद के उपाध्यक्ष महेश यादव,एवं कोषाध्यक्ष राहुल सेन,नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रेखा जितेंद्र सोनकर एवं युवा मोर्चा किसान मोर्चा मंडल एवं जिला के सभी पदाधिकारी भारतीय जनता पार्टी मंडल राजिम के सभी पदाधिकारी की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न होगा)

आई पी एल में 29 करोड़पति प्लेयर बेंच पर बैठे रहे

10 करोड़ के फर्ग्यूसन 3 मैच खेले; मावी फील्डिंग ही कर सके, टीम प्लेऑफ में पहुंची

इंडियन प्रीमियर लीग (ढ्ढक्क) अपने आखिरी स्टेज में प्रवेश कर चुकी है। लीग स्टेज के 70 में से 6 ही मैच बाकी हैं। 8 टीमों ने 13 और 2 टीमों ने 12-12 मैच खेल लिए हैं। इस दौरान टूर्नामेंट के 125 में से 29 करोड़पति खिलाड़ी ज्यादातर मैचों के लिए बेंच पर ही बैठे रह गए। 2 करोड़ से ज्यादा कीमत वाले 5 खिलाड़ियों ने एक भी मैच नहीं खेला। 4 खिलाड़ियों को एक ही मैच मिला, 3 प्लेयर्स ने 2 मुकाबले खेले, वहीं 4 खिलाड़ियों को महज 3 ही मैच में मौके मिले। 16.25 करोड़ रुपए के बेन स्टोक्स को छ्वस्य ने 2, तो वहीं 10 करोड़ के लॉकी फर्ग्यूसन को ्यय्य ने 3 ही मैच खिलाए। 6 करोड़ रुपए के शिवम मावी तो पूरे सीजन एक भी मैच नहीं खेल सके। गुजरात ने उनसे 12वें खिलाड़ी के रूप में सिर्फ फील्डिंग ही कराई और 9 मैच जीतकर टीम ने प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई भी कर लिया। आगे स्टोरी में हम 2 करोड़ रुपए से ज्यादा की कीमत वाले टॉप-10 खिलाड़ियों की बात करेंगे, जिन्होंने खराब प्रदर्शन, इंजरी या अन्य कारणों से टीम के साथ ट्रैवल तो किया लेकिन ज्यादातर मैचों में एक्स्ट्रा प्लेयर के रूप में बेंच पर ही बैठे रह गए। इनमें उन्हीं करोड़पति खिलाड़ियों को शामिल किया गया है जो इस सीजन 3 या उससे कम मैच ही खेल सके। ढ्ढक्क की 10 टीमों में कुल 240 प्लेयर्स हैं। इनमें 125 की कीमत एक करोड़ से ज्यादा और 115 प्लेयर्स की कीमत 20 से 90 लाख के बीच है। करोड़पतियों में भी 25 प्लेयर्स की कमाई 10 करोड़ से ज्यादा की है। इनमें श्रेयस अय्यर, प्रसिद्ध कृष्णा और ऋषभ पंत जैसे प्लेयर्स शामिल नहीं हैं। क्योंकि ये खिलाड़ी करोड़पति तो हैं, लेकिन इंजरी के चलते पूरे सीजन एक भी मैच नहीं खेल सके, इनकी जगह टीमों ने रीप्लेसमेंट प्लेयर्स को स्क्वॉड में शामिल किया है। इस सीजन 10 करोड़ से ज्यादा की कीमत वाले 2 खिलाड़ियों को उनकी टीमों ने 3 या उससे कम मैच खिलाए। 70 खिलाड़ियों की कीमत 3 से 9.90 करोड़ रुपए के बीच है, इनमें से 7 खिलाड़ी 3 से ज्यादा मैच नहीं खेल सके। वहीं 3 करोड़ से ज्यादा कीमत के 86 प्लेयर्स को उनकी टीमों ने 3 से ज्यादा मैच खिलाए। 12 प्लेयर्स की कीमत 2 से 2.90 करोड़ रुपए के बीच रही। इनमें 5 ही प्लेयर्स 3 से ज्यादा मैच खेल सके। वहीं 18 खिलाड़ियों की कीमत एक से 1.90 करोड़ रुपए के बीच रही, इनमें से 13 प्लेयर्स को उनकी टीमों ने 3 या उससे कम मैचों में मौके दिए। चेन्नई सुपर किंग्स (छ्वस्य) ने ढ्ढक्क के मिनी ऑक्शन में इंग्लिश ऑलराउंडर बेन स्टोक्स को 16.25 करोड़ रुपए की कीमत में खरीदा। स्टोक्स को इतनी बड़ी रकम उनके ऑलराउंड प्रदर्शन और कप्तानी के कारण मिली। छ्वस्य उन्हें बतौर कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के रीप्लेसमेंट के रूप में देख रही थी, लेकिन स्टोक्स इस सीजन 2 ही मैच खेल सके। उन्हें कोई विकेट नहीं मिला और बैटिंग से भी 15 रन ही बना सके। इंजरी के कारण उन्हें बाद के कुछ मैचों से बाहर किया गया, लेकिन बाद में उनकी चोट गहरी हो गई और वह टीम से लगातार 11 मैच नहीं खेल सके। उनकी गैरमौजूदगी का असर भी पड़ा और टीम 5 मैच हार गई। छ्वस्य इस वक्त 13 मैचों में 7 जीत, 5 हार और एक बेनतीजा मैच के बाद 15 अंक लेकर पॉइंट्स टेबल में दूसरे नंबर पर है। टीम का अब एक मैच दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ बाकी है। रिपोर्ट्स के अनुसार, स्टोक्स इस मैच में भी टीम का हिस्सा नहीं होंगे और इसके बाद इंटरनेशनल क्रिकेट की तैयारी करने के लिए इंग्लैंड लौट जाएंगे।

बेन स्टोक्स, CSK
कीमत: ₹16.25 करोड़
मैच: 2
रन: 15
बेस्ट: 8 (7)
स्ट्राइक रेट: 107.14
विकेट: 0

आईपीएल 2023 : गिल के शतक ने गुजरात टाइटंस को एसआरएच पर 34 रन से दिलाई जीत

अहमदाबाद 18 मई,। यहां के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए आईपीएल 2023 के मैच में शुभमन गिल के पहले शतक के बाद मोहम्मद शमी और मोहित शर्मा के चार-चार विकेट की मदद से गुजरात टाइटंस ने सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) को 34 रन से हराकर प्लेऑफ में जगह बनाई। टाइटंस इस सीजन में प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली टीम बन गई है और एक मैच में जाने के साथ ही अपनी किटी में 18 अंकों के साथ इसके शीर्ष-दो में रहने के आसार हैं, सनराइजर्स को आधिकारिक तौर पर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया गया है। गिल (58 रन पर 101 रन) और बी. साई सुदर्शन (36 रन पर 47 रन) ने 147 रन की साझेदारी के साथ एक बड़े टोटल की नींव रखी, जिसके बाद जीटी ने पहली पारी के अंतिम चरण में बल्ले से गति खो दी। डेथ ओवरों में 188/9 पोस्ट करने के लिए सात विकेट के नुकसान पर सिर्फ 41 रन आए। शमी (4-21) ने इसके बाद एसआरएच के शीर्ष क्रम को तोड़ दिया और मोहित (4-24) ने मध्य क्रम में छलांग लगा दी, क्योंकि मेजबान टीम ने एसआरएच को 154/9 तक सीमित करने के लिए हेनरिक क्लासेन (44 रन पर 64) के संघर्षपूर्ण प्रयास को मात दी। प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई करने वाली यह पहली टीम बनी। 189 रनों का पीछा करते हुए सनराइजर्स को पावर-प्ले में मोहम्मद शमी की ट्रिपल स्ट्राइक ने जल्दी झटका दिया और सनराइजर्स को 29/4 कर दिया। उन्होंने पहले ओवर में ओपनर अनमोलप्रीत सिंह को आउट किया। अगले ओवर में यश दयाल ने अभिषेक शर्मा को 4 रन पर आउट कर दिया। शमी ने तीसरे ओवर में फिर से राहुल त्रिपाठी को आउट किया और पांचवें ओवर में कप्तान एडेन मार्कराम का बड़ा विकेट हासिल किया और ओवर की आखिरी गेंद पर संवीर सिंह ने उन्हें अधिकतम स्कोर पर आउट कर दिया। मोहित ने मार्को जानसेन के रूप में अपना तीसरा विकेट हासिल किया, जो इसे जमीन से नीचे गिराना चाह रहे थे, लेकिन गेंद ने मोटी को आधे के अंदर ले लिया और जीटी कप्तान के लिए एक आसान कैच लपका और सनराइजर्स ने 59 के स्कोर पर अपना सातवां विकेट खो दिया। बीच में, फॉर्म में चल रहे क्लासेन ने कड़ी टक्कर दी और 35 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया और आठवें विकेट के लिए 68 रन की साझेदारी की। जब 24 गेंदों में 66 रनों की जरूरत थी, तो शमी ने 17वें ओवर में क्लासेन को वापस भेजकर 68 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी को तोड़ दिया, जिससे सनराइजर्स के लिए लाइन पार करना मुश्किल हो गया। आखिरी ओवर में मयंक मारकंडे ने मोहित को छक्का और चौका लगाया। अंतिम ओवर में 42 रन बाकी थे, राहुल तेवतिया ने सिर्फ सात रन दिए, क्योंकि जीटी ने एसआरएच को 20 ओवरों में 154/9 पर रोक दिया और 34 रन की महत्वपूर्ण जीत दर्ज की। गुजरात टाइटंस ने 20 ओवर में 188/9 (शुभमन गिल 101, साई सुदर्शन 47, भुवनेश्वर कुमार 5-30) ने सनराइजर्स हैदराबाद (हेनरिक क्लासेन 64, मोहम्मद शमी 4-20, मोहित शर्मा 4-28) को 34 रन से हराया।

इतालवी ओपन : रिबाकिना क्वार्टर फाइनल में

रोम 18 मई,। दुनिया की छठे नंबर की एलेना रिबाकिना ने मार्केटा वोंद्रोसोवा को 6-3, 6-3 से हराकर अपने पहले इटालियन ओपन के क्वार्टरफाइनल में प्रवेश कर लिया। विंबलडन चैंपियन का क्वार्टर फाइनल में दो बार की गत चैंपियन इगा स्वीयाटेक या नंबर 24 डोना वेकिच से सामना होगा। सेंट्रल कोर्ट पर सोमवार रात के मैच में स्वीयाटेक और वेकिच का आमना-सामना होना था, लेकिन बारिश के कारण मैच रद्द कर दिया गया। पाउला बदौसा और करोलिना मुचोवा के बीच राउंड 16 का मैच भी रद्द कर दिया गया। दोनों मैच मंगलवार को होंगे।

लखनऊ ने मुंबई को पांच रन से हराया

लखनऊ 18 मई,। लखनऊ सुपर जायंट्स ने मुंबई इंडियंस को आईपीएल 2023 के 63वें मुकाबले में 5 रन से हरा दिया है। लखनऊ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में तीन विकेट खोकर 177 रन बनाए। इसके जवाब में मुंबई इंडियंस की टीम 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 172 रन ही बना सकी। मुंबई के लिए ईशान किशन ने सर्वाधिक 59 रन बनाए। लखनऊ के लिए यश ठाकुर और रवि बिश्नोई ने 2-2 विकेट लिए। 178 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी मुंबई इंडियंस की शुरुआत धमाकेदार रही। रोहित और ईशान के बीच पहले विकेट के लिए 90 रन की साझेदारी हुई। रोहित 25 गेंद में 37 रन बनाकर आउट हुए। अपनी पारी में उन्होंने तीन छक्के और एक चौका लगाया। ईशान किशन भी कुछ देर बाद आउट हो गए। उन्होंने 39 गेंद में 58 रन बनाए। सूर्यकुमार सस्ते में पवेलियन लौटे। उन्होंने 9 गेंद में 7 रन बनाए। नेहल वढेरा 20 गेंद में 16 रन बनाकर आउट हुए। मुंबई को आखिरी दो ओवर में 30 रन चाहिए। टीम ने 19वें ओवर में 19 रन बना भी लिए थे। आखिरी ओवर में टीम को जीत के लिए 11 रन चाहिए थे। लेकिन मोहसिन खान ने सिर्फ पांच रन दिए। लखनऊ सुपर जायंट्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए मुंबई इंडियंस के खिलाफ मार्कस स्टॉयनिस के दमदार 89 रनों की बदौलत 20 ओवर में 3 विकेट खोकर 177 रन बनाए। लखनऊ के लिए मार्कस स्टॉयनिस ने 47 गेंद में 89 रन बनाए। मुंबई इंडियंस के लिए जेसन बेहरेनडॉर्फ ने 2 और पीयूष चावला ने एक विकेट लिया। लखनऊ ने आखिरी पांच ओवरों में 69 रन बटोरे। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी लखनऊ सुपर जायंट्स की शुरुआत खराब रही। टीम ने पावरप्ले में ही दो विकेट गंवा दिए थे। जेसन बेहरेनडॉर्फ ने दीपक हुड्डा और प्रेरक मांकड़ को पवेलियन भेजा। 7वें ओवर में क्विंटन डिकॉक भी 16 रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद कप्तान क्रुणाल पांड्या और मार्कस स्टॉयनिस ने पारी को संभाला और चौथे विकेट के लिए अर्धशतकीय साझेदारी की। क्रुणाल 49 के निजी स्कोर पर रिटायर्ड हर्ट हो गए। लेकिन दूसरे छोर से मार्कस ने अर्धशतक पूरा किया और ताबड़तोड़ बल्लेबाजी जारी रखी। पूरन ने 8 रन बनाए। मार्कस स्टॉयनिस 47 गेंद में 89 रन बनाकर नाबाद रहे। अपनी पारी में उन्होंने 8 छक्के और चार चौके लगाए। इस हार के बाद मुंबई 14 अंक लेकर अंकतालिका में चौथे स्थान पर है जबकि इतने ही मैचों में 15 अंक के साथ लखनऊ तीसरे स्थान पर पहुंच गई है।

रोमांचक मुकाबले में दिल्ली ने पंजाब को 15 रनों से हराया

धर्मशाला 18 मई,। आईपीएल 2023 में प्लेऑफ की दौड़ से सबसे पहले दिल्ली कैपिटल्स ही बाहर हुई थी। अब आखिरी दो मुकाबले डेविड वॉर्नर की टीम के लिए सम्मान बचाने की चुनौती भर थी। धर्मशाला में खेले मुकाबले में दिल्ली ने पंजाब किंग्स को हरा दिया। इस हार के साथ ही क्कक्च्यस् के प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीदें भी धाराशायी हो गई हैं। इस मैच के नतीजे के बाद अब प्लेऑफ की जंग रोमांचक होती दिख रही है। आरसीबी और मुंबई इंडियंस दोनों के पास 16 प्वाइंट्स तक पहुंचने का मौका है। पहले बल्लेबाजी करते हुए दिल्ली कैपिटल्स ने 2 विकेट के नुकसान पर 213 रन बनाए थे। अपने कमबैक मैच में पृथ्वी शॉ ने शानदार 54 रन बनाए। राइली रूसो नाबाद रहे और उन्होंने 37 गेंदों में 82 रन ठोक डाले। डेविड वॉर्नर ने भी 46 रनों की पारी खेली और दिल्ली ने जीत के लिए अच्छा टारगेट सेट किया था। पंजाब के लिए दोनों विकेट सैम करन ने लिए। पंजाब किंग्स की शुरुआत अच्छी नहीं रही और कप्तान शिखर धवन बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गए। इसके बाद ओपनर प्रभासिमरन सिंह भी सिर्फ 22 रन ही बना सके। हालांकि लियाम लिविंगस्टोन और अथर्व ताइडे ने मोर्चा संभाला और दिल्ली के गेंदबाजों की खूब धुनाई की। 55 के निजी स्कोर पर अथर्व को रिटायर हर्ट होना पड़ा। एक छोर से गिरते विकेट के बीच लिविंगस्टोन डटे रहे और पंजाब की जीत की उम्मीदों को बनाए रखा। जितेश शर्मा इस मुकाबले में कुछ खास नहीं कर पाए और बिना खाता खोले पवेलियन लौट गए।

नजम सेठी पर भड़के रमीज राजा

रमीज राजा की यह फोटो 13 सितंबर, 2021 की है। जब उन्हें क्कष्टक्र का अध्यक्ष चुना गया था। बता दें, हाल ही में एक इंटरव्यू में सेठी ने बताया था कि एशिया कप इंग्लैंड में भी खेला जा सकता है। उन्होंने इस इंटरव्यू में कहा था, %एशिया कप की मेजबानी हमारे पास है और हम ये तय करेंगे कि न्यूट्रल वेन्यू पर मैचों का आयोजन कहां पर होना चाहिए। हो सकता है कि हम ये भी कहें कि हम इंग्लैंड में खेलना चाहते हैं। ढ्ढष्टष्ट के कैलेंडर में 2023 में होने वाले एशिया कप की मेजबानी पाकिस्तान को दी गई है। ्रष्टष्ट्ठ ने कैलेंडर जारी होते ही यह साफ कर दिया था कि भारतीय टीम खेलने के लिए पाकिस्तान नहीं जाएगी। ्रष्टष्ट्ठ ने एशिया कप किसी न्यूट्रल वेन्यू पर कराने को कहा था, लेकिन पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड नहीं माना, क्योंकि अपनी बिगड़ी हुई आर्थिक स्थिति संवारने के लिए उसे एशिया कप से ही उम्मीद है। हालांकि, पाकिस्तान ने टूर्नामेंट को हाइब्रिड मॉडल पर कराने का प्रस्ताव भी दिया था। इसके मुताबिक, भारत के मैच बाहर करा दिए जाएंगे। टूर्नामेंट के बाकी मैच पाकिस्तान में होंगे। भारत अगर फाइनल में पहुंचता है तो फाइनल भी पाकिस्तान के बाहर होगा। एशिया कप 2023 के लिए छह टीमें क्वालीफाई कर चुकी हैं। इस बार का एशिया कप सितंबर के शुरुआती सप्ताह में होना है। 13 दिनों तक चलने वाले 6 टीमों के टूर्नामेंट में फाइनल समेत कुल 13 मैच होंगे। भारत और पाकिस्तान एक ही ग्रुप में हैं। पहली बार एशिया कप का आयोजन साल 1984 में हुआ था। एशिया कप के 39 साल के इतिहास में भारत सबसे सफल टीम है।

शूटर अंजुम को खेल मंत्री अनुराग ठाकुर से मिला अर्जुन अवार्ड

चंडीगढ़। इंटरनेशनल शूटर अंजुम को नई दिल्ली में खेल मंत्री अनुराग ठाकुर ने सादे समारोह में अर्जुन अवार्ड दिया। इस मौके पर इंटरनेशनल शूटर अंजुम ने कहा कि यह अवार्ड मेरा ना होकर चंडीगढ़ के हर उस शूटर का है, जो भारत के लिए इंटरनेशनल मैडल लाने के सपने देखता है। हालांकि वर्ष 2019 में अर्जुन अवार्ड मिलने की खुशी तो बहुत थी। लेकिन यह मेरी जिंदगी का ऐसा अवार्ड है जो जब हाथ में आया तब लगा कि वाकई अपने देश, अपने परिवार और अपने खेल शूटिंग के लिए मैंने कुछ किया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2019 में 3 खिलाड़ी अर्जुन अवार्ड और द्रोणाचार्य अवार्ड विदेश में होने के कारण नहीं ले पाए थे। वर्ल्ड कप के चलते विदेश होने के कारण अंजुम अर्जुन अवार्ड ले नहीं पाई थी।

जोफ्रा आर्चर का बाहर होना इंग्लैंड के लिए बड़ा झटका : एलन बॉर्डर

मेलबर्न 18 मई,। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान एलन बॉर्डर का मानना है कि तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर का इंग्लैंड के पूरे घरेलू समर मैचों से बाहर होना टीम के लिए एक बड़ा झटका साबित होगा, जो एजबेस्टन में 16 जून से खेली जाने वाली एशेज को फिर से हासिल करने की कोशिश में है। आर्चर अपनी दाहिनी कोहनी में स्ट्रेस फैक्च र की पुनरावृत्ति से पीड़ित होने के बाद एशेज और इंग्लैंड की बाकी क्रिकेट गर्मियों में गायब रहेंगे, जिसने पहले उन्हें आईपीएल 2023 में मुंबई इंडियंस के अभियान से बाहर कर दिया था। आर्चर ने मार्च 2021 के बाद से इंग्लैंड के लिए कोई टेस्ट नहीं खेला है और लगभग दो साल तक कोहनी और पीठ की चोट से जूझने के बाद इस साल की शुरूआत में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी की। बॉर्डर को फॉक्स क्रिकेट के हवाले से कहा गया, आर्चर ने पिछली श्रृंखला में हमारे लोगों को चिंतित किया था , इसलिए वह इंग्लैंड के लिए एक बड़ा झटका है। उस एक्स-फैक्टर गेंदबाज का बाहर होना ऑस्ट्रेलिया के लिए अच्छा है, जिसके बारे में आप यह जानते हैं कि वह विपक्ष को परेशान करने वाला है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि ट्रैक क्या है। उनके पास वह तेज गति है कि कोई भी उनका सामना करना पसंद नहीं करता है। आर्चर ने इंग्लैंड में 2019 एशेज में अपना टेस्ट डेब्यू किया था, जिसमें 20.27 की औसत से 22 विकेट लिए थे, जिसमें अत्यधिक प्रतिस्पर्धा वाली श्रृंखला में टीम की दो जीत में छह-छह विकेट लेना शामिल था। यह वास्तव में इंग्लैंड के लिए एक बड़ा झटका है। वह एक ऐसा गेंदबाज है जो अपने दम पर श्रृंखला जीत सकता है। वह उन रोमांचक गेंदबाजों में से एक है जिसका आप सामना नहीं करना चाहते हैं, खासकर इंग्लैंड में।

हार के बावजूद कंबोडियाई एथलीट ने जीता दिल

एनीमिया से पीड़ित बोउ समनांग ने बारिश में भीगकर पूरी की 5000 मीटर की रेस

कंबोडिया। साउथ ईस्ट एशियन गेम्स में एनीमिया से पीड़ित कंबोडिया की महिला धावक बोउ समनांग ने बारिश में भीग कर 5000 मीटर दौड़ को पूरा किया। बारिश शुरू होने के बावजूद वह ट्रैक पर 90 सेकेंड तक अकेली दौड़ती रही और अपनी दौड़ को पूरा किया। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। सभी लोग कंबोडिया के इस महिला धावक की जज्बे की तारीफ कर रहे हैं। इंटरनेशनल ओलिंपिक कमेटी (द्बह्रष्ट)की ऑफिशियल वेबसाइट पर बोउ समनांग का इंटरव्यू 16 मई को जारी होने के बाद उनका वीडियो वायरल हुआ। साउथ ईस्ट एशियन गेम्स 5 से 17 मई तक कंबोडिया में हुई। 8 मई को विमेंस के 5000 मीटर दौड़ आखिरी इवेंट था। सभी एथलीटों के दौड़ पूरा करने से पहले ही बारिश शुरू हो गई। जब बारिश हुई तब ट्रैक पर कंबोडिया की बोउ समनांग अकेली थी और वे दौड़ अभी पूरा नहीं कर पाई थीं। समनांग ने बारिश में भीगते हुए दौड़ को पूरा किया। इस दौरान लोग ताली बजाकर उनके हौसला अफजाई करते रहे। पहले स्थान पर रहने वाली एथलीट 6 मिनट पहले ही रन को पूरा कर लिया था। बोउ समनांग ने श्वद्य4द्बश्चद्बष्द्य.ष्श्द्व से बात करते हुए बताया कि वह अनीमिया से पीड़ित हैं। इवेंट के दिन तबियत भी खराब थी। ऐसे में वह धीरे-धीरे दौड़ रही थी। वह दौड़ को पूरा करना चाहती थी। उन्हें इवेंट शुरू होने से पहले अंदाजा था कि शायद उनके दौड़ पूरा करने से पहले बारिश शुरू हो जाएगी। पर मैंने तय कर रखा था कि दौड़ को पूरा करूंगी। मैं कंबोडिया का प्रतिनिधित्व कर रही थी। स्टेडियम में लोगों का पूरा साथ मिल रहा था। इसलिए बारिश होने के बावजूद मैंने दौड़ पूरा किया। मेरे पास दौड़ को बीच में छोड़ने की स्वतंत्रता थी। पर मैंने ऐसा नहीं किया। मैं नहीं चाहती थी कि जो लोग देखने आएं हैं उन्हें निराश करूं। जब उनका साथ मिला तो मैंने दौड़ को पूरा किया। वीडियो वायरल होने के बाद बोउ सोमनांग को सोशल मीडिया पर असली चैंपियन बता रहे हैं। एक यूजर ने लिखा की सही मायने में इस इवेंट को आपने जीता। आप ही असली चैंपियन हो। एक अन्य यूजर ने लिखा, भले ही आप मेडल नहीं जीत सकीं, पर अपना सर्वश्रेष्ठ देने वाली एथलीट हैं। जिसे कोई कम नहीं कर सकता। कंबोडिया के प्रधानमंत्री हुन सेन ने बोउ सोमनांग के जज्बे को सलाम करते हुए 10 हजार डॉलर(8,25,887 रुपए) इनाम दिए। उन्होंने कहा कि मेरी पत्नी बोउ सोमनांग से काफी प्रभावित हुईं। यह इनाम उनकी ओर से है।

आजकल एक्टर्स के पास इतने संसाधन हैं जो हमारे पास कभी नहीं थे : स्नेहा रायकर

नागिन 6 की अभिनेत्री स्नेहा रायकर ने अपने अभिनय करियर के शुरूआती वर्षों के बारे में बात की और बताया कि कैसे उद्योग में कास्टिंग से लेकर कार्य संस्कृति तक कई चीजें बदली हैं।उनके अनुसार, एक्टर्स के लिए कम संसाधन थे और यहां तक कि मंच का चुनाव भी कुछ चुनिंदा चैनलों तक ही सीमित था।उन्होंने कहा- उस समय, अवसर कम थे और साथ काम करने के लिए केवल दो-तीन चैनल थे। इसके साथ ही, कास्टिंग की प्रक्रिया अलग थी क्योंकि सोशल मीडिया तब तक प्रचलन में नहीं था। आजकल एक्टर्स के पास इतने संसाधन हैं जो हमारे पास कभी नहीं थे। मुझे याद है कि मैं अपने पोर्टफोलियो की हार्ड कॉपी अलग-अलग कास्टिंग डायरेक्टर्स के पास ले जाया करती थी।एक्ट्रेस ने कहा कि समय में बदलाव के साथ अब एक्टर्स अपने प्रमोशन के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं, हालांकि पहले ऐसा नहीं था। आजकल, सोशल मीडिया किसी भी अभिनेता के पोर्टफोलियो से कम नहीं है। एक्टर्स के सोशल मीडिया प्रोफाइल को देखकर कई कास्टिंग की जाती हैं। और, हर जगह कास्टिंग की जाती है और उसके लिए किसी को अपना आधार नहीं बदलना पड़ता, जो हमारे साथ नहीं था।स्नेहा ने बहुत सारे मराठी शो किए हैं, जैसे वर्चा क्लास, लव लगना लोचा और भी बहुत कुछ। अभिनेत्री को कुछ मराठी फिल्मों में भी देखा गया है, और फिल्म कुत्ते में देखा गया था। स्नेहा ने उद्योग में देखे गए परिवर्तनों के बारे में साझा किया और कहा- उद्योग समय के साथ बढ़ा है। ऐसे कई चैनल और अन्य माध्यम उपलब्ध हैं जहां एक्टर्स को काम मिल सकता है। अभी जो सबसे बड़ा विकल्प उपलब्ध है वह ओटीटी है, जो हमारे समय में नहीं था। कास्टिंग से लेकर अवसरों तक, मेरा मानना है कि बहुत सी चीजें बेहतर तरीके से बदली हैं।हालांकि, अभिनेत्री ने कहा कि वह भाग्यशाली हैं क्योंकि उन्हें अवसर आसानी से मिले- मैं अपने आप को भाग्यशाली मानती हूं कि मैंने कभी भी काम के लिए संघर्ष नहीं किया। मुझे एक के बाद एक प्रोजेक्ट मिलते गए और मैं बस अपने कौशल को बढ़ाने पर काम करती रही। मैं इस उद्योग का हिस्सा बनकर खुश और आभारी हूं।

वनवे में जैकलीन व जायद खान के साथ नजर आएंगी चाहत खन्ना

एक वक्त था जब हिन्दी फिल्म उद्योग में रामसे ब्रदर्स के नाम का डंका बजता था। रामसे ब्रदर्स की हॉरर फिल्में बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर होती थी। उन्होंने कई फिल्मों का निर्माण किया। लम्बे समय से रामसे ब्रदर्स के नाम से कोई फिल्म बाजार में नहीं आई है। लेकिन अब इस परिवार के फिल्म निर्माता श्याम रामसे की बेटी साशा रामसे बतौर निर्देशक सामने आ रही हैं। इन दिनों वे फिल्म वन वे का निर्देशन कर रही हैं, जिसके जरिये संजय खान के बेटे अभिनेता जायद खान बॉलीवुड में वापसी करने जा रहे हैं। इस फिल्म में जैकलीन फर्नांडिस भी मुख्य भूमिका में हैं और एकता कपूर के सोप ओपेरा बड़े अच्छे लगते में दिखाई दी चाहत खन्ना भी नजर आएंगी।बड़े अच्छे लगते हैं की एक्ट्रेस चाहत खन्ना ने जैकलीन फर्नांडीस अभिनीत फिल्म वन वे का हिस्सा बनने के लिए अपनी खुशी साझा की। उन्होंने कहा कि वह विभिन्न अवसरों की खोज करने और चुनौतीपूर्ण भूमिकाएं निभाने के लिए उत्सुक हैं। वन वे एक सुपरनेचुलर थ्रिलर है, जिसमें मैं हूं ना एक्टर जायद खान भी हैं और फिल्म निर्माता श्याम रामसे की बेटी साशा द्वारा निर्देशित है। फिल्म में, चाहत एक महिला की भूमिका निभा रही हैं, जो जैकलीन फर्नांडीस द्वारा निभाए गए किरदार की मेंटॉर है। इसके अतिरिक्त चाहत इन दिनों यात्री नामक फिल्म भी नजर आएंगी। उन्होंने कहा कि दोनों फिल्में एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं और इसी बात से चाहत खुश हैं।चाहत यात्री नाम की एक और फिल्म में भी नजर आने वाली हैं। इन प्रोजेक्ट्स के बारे में बात करते हुए, चाहत ने कहा, मुझे अलग-अलग माध्यमों में काम करने में मजा आता है। हालांकि, अन्य माध्यमों की तुलना में फिल्मों की शेल्फ लाइफ लंबी होती है और यही कारण है कि हर अभिनेता फिल्में करने की इच्छा रखता है। जबकि मैं अतीत में कई फिल्मों का हिस्सा रही हूं, मेरी आने वाली फिल्में मुझे ऐसे किरदारों में दिखाएंगी जो मैंने पहले नहीं निभाए हैं। इन फिल्मों ने मुझे एक अभिनेत्री के रूप में अपनी क्षमता दिखाने और उस तरह के किरदार निभाने का मौका दिया, जिसने मुझे अपनी सीमाओं को पार करने की चुनौती दी।कुमकुम, काजल, कुबूल है और कई अन्य फिल्मों के लिए जानी जाने वाली अभिनेत्री ने कहा कि उनके लिए सबसे संतोषजनक बात यह है कि उन्हें कई तरह की भूमिकाएं मिलें और प्रत्येक के साथ प्रयोग करने और सीखने का मौका मिले।एक्टर के रूप में, हम विभिन्न प्रकार की भूमिकाएं निभाना चाहते हैं। मैंने हमेशा यह सुनिश्चित करने के लिए एक सचेत प्रयास किया है कि मैं किसी इमेज में स्टीरियोटाइप न हो जाऊं। मेरा प्रयास हर बार जब आप कोई प्रोजेक्ट करते हैं तो दर्शकों को आश्चर्यचकित करना होता है। मैं हमेशा एक बहुमुखी अभिनेत्री बनने का प्रयास किया है और इस तथ्य के लिए आभारी हूं कि मुझे इन सभी वर्षों में कई तरह के किरदार करने का अवसर मिला है। पेशेवर रूप से, मुझे पूरा विश्वास है कि 2023 मेरे लिए एक इवेंटफुल साल होगा।

मिस रीटा बन मस्तराम के होश उड़ा चुकी है केनिशा

वेब सीरिज मस्तराम', हंसमुख' और रक्तांचल' में नजर आ चुकी एक्ट्रेस केनिशा अवस्थी को उनके बोल्ड अंदाज के लिए जाना जाता है। केनिशा अवस्थी ने मस्तराम के एक एपिसोड में ग्लैमरस और बोल्ड टीचर मिस रीटा का किरदार निभाया था। इस रोल में केनिशा ने बोल्डनेस की सारी हदें पार करते हुए एक्टर राजाराम यानी अंशुमान झा के साथ बेहद इंटीमेट सीन्स दिए थे। केनिशा अब एक बार फिर बोल्ड अवतार में नजर आने वाली हैं। केनिशा अवस्थी जल्द ही अपकमिंग वेब सीरीज द कैंसर बिच' में नजर आने वाली हैं। इसके डायरेक्टर बॉलीवुड के मशहूर डायरेक्टर विकास बहल हैं। इस सीरिज में लीड किरदार गुल पनाग ने निभाया है। उनके अलावा वैभव राज गुप्ता, नम्रता शाह, समृद्धि दीवान, इशिता अर्जुन और नवीन बावा ने भी काम किया है। अपने रोल को लेकर केनिशा ने एक इंटरव्यू में कहा था- मैं इस सीरिज का हिस्सा बनकर बेहद खुश और खुद को सम्मानित और सौभाग्यशाली महसूस कर रही हूं। विकास बहल लाजवाब डायरेक्टर और इंसान हैं। मेरे लिए इस फिल्म की शूटिंग का अनुभव गजब का रहा है। बता दें कि केनिशा अवस्थी मशहूर बॉलीवुड सिंगर सपना अवस्थी की बेटी हैं। सपना अवस्थी ने परदेसी-परदेसी, छैंया-छैंया, बन्नो तेरी अंखिया सुरमेदानी जैसे मशहूर गाने गाए हैं। वहीं, उनकी बेटी अब एक्टिंग में किस्मत आजमा रही है। केनिशा अवस्थी पहली बार वेब सीरीज हंसमुख' में नजर आई थीं। इस सीरीज में उनके साथ वीर दास, रणवीर शौरी और रवि किशन जैसे एक्टर्स ने काम किया था। इसके बाद केनिशा अवस्थी को एमएक्स प्लेयर की सबसे बोल्ड वेब सीरीज मस्तराम में काम किया। इस सीरीज में उन्होंने टीचर मिस रीटा का रोल निभाया। इस किरदार में केनिशा ने बोल्डनेस की सारी हदें पार कर दीं बता दें कि केनिशा अवस्थी सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव हैं। इंस्टाग्राम पर उन्होंने अपने बायो में खुद को सिंगर, कम्पोजर, एक्टर और कंटेंट क्रिएटर बताया है। इंस्टाग्राम पर केनिशा के 8.4 लाख फॉलोअर्स हैं। वहीं, केनिशा 1491 लोगों को फॉलो करती हैं। केनिशा अवस्थी म्यूजिक एलबम जुनून' में भी नजर आ चुकी हैं। जुनून एक लव सॉन्ग है, जिसे खुद केनिशा ने ही गाया है। इस गाने के बोल और म्यूजिक भी केनिशा अवस्थी ने ही दिए हैं। केनिशा अवस्थी अपनी हॉट अदाओं के लिए सुर्खियों में रहती हैं। कुछ महीनों पहले केनिशा एक इवेंट में पहुंची थीं, जहां उनका बोल्ड अंदाज काफी सुर्खियों में रहा था। इस दौरान केनिशा ब्लैक कलर की डीप नेक ड्रेस में बेहद ग्लैमरस लग रही थीं। इस ड्रेस में केनिशा अवस्थी ने अपनी कर्वी फिगर को डेयरिंग अंदाज में फ्लॉन्ट किया था। बता दें कि इस इवेंट में केनिशा ने अपने लुक को न्यूड शेड मेकअप और शानदार हेयरस्टाइल के साथ कम्प्लीट किया था। बता दें कि केनिशा एक ऐसी एक्ट्रेस हैं, जिन्हें बोल्ड सीन से कोई परहेज नहीं है। केनिशा के इंस्टाग्राम अकाउंट पर उनकी एक से बढ़कर एक बोल्ड तस्वीरें और वीडियो मौजूद हैं।

बोल्डनेस और हॉट अदाओं की वजह से अक्सर सुर्खियों में रहती जिनी जैज

ओटीटी प्लेटफॉर्म उल्लू की कई सीरीज में नजर आ चुकीं एक्ट्रेस जिनी जैज अब वेब सीरीज की दुनिया का जाना-माना चेहरा हैं। जिनी जैज अपनी बोल्डनेस और हॉट अदाओं की वजह से अक्सर सुर्खियों में रहती हैं। आज के दौर में जिनी जैज की गिनती ओटीटी की सबसे बोल्ड एक्ट्रेसेस में होती है। बता दें कि मॉडल से एक्ट्रेस बनीं जिनी जैज अब तक कई वेब सीरिज में नजर आ चुकी हैं। हालांकि, उन्हें पहचान ओटीटी प्लेटफॉर्म उल्लू की सीरिज चरमसुख- जाने अनजाने में से पहचान मिली।चरमसुख- जाने अनजाने में नाम की वेब सीरीज में जिनी जैज ने बेहद बोल्ड सीन किए थे, जिसकी हर तरफ चर्चा थी। बता दें कि जिनी जैज मूल रूप से गोवा की रहने वाली हैं। हालांकि, एक्टिंग में करियर बनाने के लिए वो 2016 में मुंबई शिफ्ट हो गईं।जिनी जैज की पॉपुलैरिटी की बात करें तो इंस्टाग्राम पर उनके 3.6 लाख फॉलोअर्स हैं। वहीं जिनी सिर्फ 330 लोगों को फॉलो करती हैं। बता दें कि जिनी का इंस्टा अकाउंट उनकी बोल्ड और इरॉटिक तस्वीरों से भरा पड़ा है।बता दें कि जिनी जैज ने वेब सीरीज में मेल एक्टर्स ही नहीं, बल्कि फीमेल को-स्टार्स के साथ भी जमकर बोल्ड सीन्स दिए हैं। यही वजह है कि उन पर कई बार अश्लीलता परोसने के आरोप लग चुके हैं।जिनी जैज भी बोल्ड और इंटीमेट सीन्स देने में बिल्कुल भी झिझक महसूस नहीं करतीं। वो खुद एक इंटरव्यू में इस बात को कबूल कर चुकी हैं कि ओटीटी प्लेटफॉर्म के दर्शक अलग हैं और मुझे बोल्ड कंटेंट से कोई परहेज नहीं है।जिनी जैज के मुताबिक, नए आर्टिस्ट के पास ज्यादा चुनने का ऑप्शन नहीं होता। अगर आपको मौका मिलता है तो बस खुद को साबित करना होता है। ऐसे में अगर आप सोचने लगे कि लोग क्या कहेंगे, तो फिर मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।अश्लीलता की बात को लेकर जिनी जैज का कहना है कि अगर लोग ऐसा कंटेंट न देखें, तो प्रोड्यूसर खुद-ब-खुद इन्हें बनाना बंद कर देंगे। लेकिन इस तरह का कंटेंट ओटीटी पर बड़ी संख्या में देखा जाता है, जिसकी वजह से प्रोड्यूसर इस तरह की वेब सीरीज बनाते हैं।जिनी जैज वेब सीरिज के अलावा अब साउथ की फिल्मों में भी नजर आएंगी। जिनी ने हाल ही में एक साउथ फिल्म की शूटिंग भी शुरू कर दी है। बता दें कि जिनी ने चरमसुख के अलावा जान बूझकर और टू बी और नॉट टू बी जैसी वेब सीरीज में भी काम किया है।इंटरनेट पर मौजूद जानकारी के मुताबिक, जिनी जैज का जन्म 27 जून, 1986 को हुआ था। इनकी मां का नाम रजनी जोसेफ और पिता का जोसेफ क्रिस्टी है। जिनी ने अपनी स्कूली पढ़ाई मुंबई के सेंट जेवियर स्कूल से पूरी की है। इसके बाद उन्होंने कालेज की पढ़ाई सेंट जॉन्स कॉलेज मुंबई से की।जिनी को बचपन से ही एक्टिंग और मॉडलिंग का शौक था। यही वजह थी कि उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई पूरी होते ही एक्टिंग क्लास ज्वॉइन कर ली। बाद में जिनी मॉडलिंग करने लगीं और कई बोल्ड फोटोशूट भी कराए, जो खूब वायरल हुए।जिनी के बोल्ड फोटोशूज की वजह से ही उन्हें आगे चलकर वेब सीरीज में बोल्ड रोल निभाने का मौका मिला। बता दें कि जिनी जैज ऑनस्क्रीन ही नहीं, बल्कि रियल लाइफ में भी बेहद बोल्ड हैं। वो कई बार वह बिकिनी और स्विमसूट में अपनी हॉटनेस दिखा चुकी हैं।

धूम-4 में नेगेटिव रोल निभाएंगे जॉन अब्राहम

यशराज फिल्म्स की धूम' हिंदी सिनेमा की बेहतरीन फ्रेंचाइजी में से एक है। धूम', धूम-2'और धूम-3' के बाद खबर है कि यशराज फिल्म्स इस फ्रेंचाइजी की चौथी क़िस्त लेकर आएगा। 2004 में रिलीज हुई धूम' के पहले एपिसोड में अभिनेता जॉन अब्राहम ने नकारात्मक भूमिका निभाई थी। धूम-2' में ऋतिक रोशन और धूम-3' में आमिर खान निगेटिव रोल में नजर आए थे। अब धूम-4' में एक बार फिर जॉन को लिया गया है और ऐसी चर्चा है कि वह निगेटिव रोल निभाएंगे।रिपोर्ट के मुताबिक इस साल की शुरुआत में जॉन ने शाहरुख खान स्टारर पठान' में अपने दमदार परफॉर्मेंस से दर्शकों का दिल जीत लिया है। लोगों ने जॉन को नेगेटिव रोल में पसंद किया। इसलिए अगर यश राज (वाईआरएफ) फिल्म्स जॉन को धूम फ्रेंचाइजी में वापस लें, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जॉन पिछले कुछ दिनों से वाईआरएफ के साथ लगातार संपर्क में हैं और उनके साथ कई मीटिंग भी कर चुके हैं। दिलचस्प बात यह है कि पठान' में उनकी भूमिका को निर्माता आदित्य चोपड़ा ने भी सराहा था। उन्होंने यह भी कहा कि वह जॉन को एक बार फिर धूम' में देखना पसंद करेंगे। धूम' फ्रेंचाइजी बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही है। यशराज फिल्म्स ने 2015 में धूम-4' की घोषणा की थी, लेकिन उसके बाद से फिल्म को लेकर कोई अपडेट नहीं आया। हालांकि फैंस ने धूम-4' में जॉन अब्राहम और ऋतिक रोशन को एक साथ बड़े पर्दे पर देखने की इच्छा जताई है।

फाइटर- ऋतिक से कमतर नहीं है दीपिका की भूमिका बनेंगी वायुसेना अधिकारी

पठान की सफलता का जश्न मनाने वाले निर्देशक सिद्धार्थ आनंद फिलहाल फाइटर की शूटिंग में बिजी हैं। फिल्म में ऋतिक रोशन और दीपिका पादुकोण मुख्य भूमिका में हैं। ऋतिक और दीपिका दोनों पहली बार किसी फिल्म के लिए एक साथ आ रहे हैं। इन दोनों को परदे पर एक साथ देखने के लिए दर्शकों का उत्साह चरम पर जिसे इंटरनेट पर सर्चिंग के दौरान साफ देखा जा सकता है। ऋतिक फाइटर में पैटी का किरदार निभा रहे हैं। हाल ही में एक मीडिया हाउस के साथ बातचीत करते हुए सिद्धार्थ आनन्द ने फाइटर में दीपिका पादुकोण के किरदार को लेकर बातचीत की, जिसमें उन्होंने बताया, मैं हमेशा यह कहता हूं, कि मेरे महिला अंग वास्तव में मजबूत हैं, और बहुत ही रोमांचक हैं। फाइटर में भी दीपिका एयरफोर्स ऑफिसर का किरदार निभा रही हैं। वह इकाई का हिस्सा है, वायु सेना की कुलीन इकाई है, और यह बहुत सारी वास्तविकता और प्रामाणिकता पर आधारित है। तो यह कुछ ऐसा है जिसे दीपिका ने पहले नहीं निभाया है। उसने सचमुच इसमें काट लिया है और ईमानदारी से कहूं तो यह वास्तविक जीवन में उसके जैसा है।उन्होंने कहा कि सेट पर दीपिका के साथ काम करना मजेदार है। दीपिका सेट पर काफी मस्ती करती हैं। और, वह उस चरित्र को ऋतिक के चरित्र के लिए एक वास्तविक अच्छे प्रतियोगी (प्रतियोगिता) के रूप में अनुवादित कर रही है। तो यह बहुत ही रोमांचक है। इस फिल्म की शूटिंग देश भर में कई चरणों में की जा रही है। टीम ने हाल ही में फाइटर का कश्मीर शेड्यूल पूरा किया है।इस बीच, सिद्धार्थ आनंद अपनी पिछली रिलीज पठान की महिमा का आनंद ले रहे हैं, जो सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बन गई है। शाहरुख खान, दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम की मुख्य भूमिका वाली इस फिल्म ने सिनेमाघरों में लगभग 50 दिन बिताए हैं और दुनिया भर में 1000 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई की है।

सलमान खान के साथ बजरंगी भाईजान के सीक्ल में करीना कपूर नहीं

पूजा हेगड़े आएंगी नजर

सलमान खान की फिल्म बजरंगी भाईजान की रिलीज को लगभग 8 साल का समय होने जा रहा है। फिल्म को दर्शकों ने काफी पसंद किया था और अब उन्हें इसके सीक्ल पवन पुत्र का इंतजार है। फिल्म की घोषणा के बाद से प्रशंसक सलमान को फिर से उसी भूमिका में देखने के लिए उत्सुक हैं, वहीं अब फिल्म से जुड़ा अपडेट सामने आया है। कहा जा रहा है कि फिल्म में करीना कपूर नहीं, पूजा हेगड़े मुख्य भूमिका में होंगी। रिपोर्ट के अनुसार, सलमान ने फिल्म पवन पुत्र में पूजा को शामिल कर लिया है। दूसरे शब्दों में कहे तो फिल्म में वह करीना की जगह लेंगी। पूजा वही किरदार निभाएंगी या नहीं जो करीना ने पहली फिल्म में निभाया था, यह अभी पता नहीं चला है। दिलचस्प बात यह है कि सलमान की आने वाली फिल्म किसी का भाई किसी की जान में भी पूजा मुख्य भूमिका में नजर आ रही हैं। इन फिल्मों में साथ नजर आ चुके हैं सलमान-करीनासलमान और करीना अभी तक 3 फिल्मों में साथ काम कर चुके हैं। दोनों की पहली फिल्म क्योंकि 2005 में आई और इसके बाद 2009 में वह मैं और मिसेज खन्ना में साथ नजर आए। आखिरी बार दोनों 2015 में बजरंगी भाईजान में दिखे थे। यह थी बजरंगी भाईजान की कहानीबजरंगी भाईजान एक पाकिस्तानी लड़की मुन्नी (हर्षाली मल्होत्रा) की कहानी है, जो भारत में अपनी मां से बिछड़ जाती है। इसके बाद बजरंगी (सलमान) मुन्नी से मिलता है और उसे पाकिस्तान में उसकी मां से मिलाने का जिम्मा उठा लेता है। फिल्म में दोनों के बीच एक खूबसूरत रिश्ता देखने को मिलता है। इस फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने एक पाकिस्तानी पत्रकार चांद नवाब की भूमिका निभाई थी, वहीं करीना रसिका पांडे के किरदार में नजर आई थीं। इस दिन रिलीज होगी किसी का भाई किसी की जानफरहाद सामजी द्वारा निर्देशित किसी का भाई किसी की जान अप्रैल में ईद पर यानी 21 तारीख को रिलीज होने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

ग्वालियर में हिंदू महासभा ने मनाई राष्ट्रपिता के हत्यारे नाथूराम गोडसे की जयंती, पुलिस ने की झूमाझटकी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे की जयंती पर एक बार फिर ग्वालियर में जमकर हंगामा हुआ, हिंदू महासभा के कार्यकर्ताओं ने गोडसे की तस्वीर पर माल्यार्पण पूजा अर्चना की और फल वितरण का कार्यक्रम शुरू किया ही था कि पुलिस मौके पर पहुंची और तस्वीर को अपने कब्जे में ले लिया इस दौरान पुलिस और हिंदू महासभा के कार्यकर्ताओं के बीच झूमा झटकी भी हुई, उधर हिंदू महासभा ने पीएम नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर देशभर में गोडसे की मूर्ति लगाने की अनुमति मांगी है, तनाव को देखते हुए काफी संख्या में हिंदू महासभा कार्यालय पर पुलिस फोर्स तैनात रहा।आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे की 114 वीं जयंती है, ग्वालियर में हिन्दू महासभा गोडसे की जयंती और पुण्य तिथि पर हर साल कार्यक्रम करती है, इस बार भी हिंदू महासभा के कार्यकर्ता दौलतगंज स्थित हिंदू महासभा कार्यालय पर इकट्ठा हुए और गोडसे की तस्वीर पर माल्यार्पण कर पूजा-अर्चना की और फल वितरण का कार्यक्रम शुरू किया।हिन्दू महासभा का कार्यक्रम था कि गरीबों में फल का वितरण किया जाये और गोडसे की जयंती धूमधाम से मनाई जाये, हिन्दू महासभा कार्यकर्ता नाथूराम गोडसे की तस्वीर लेकर स?क पर जैसे ही निकले, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुँच गई गोडसे की तस्वीर को अपने कब्जे में लेने की कोशिश की।पुलिस ने हिंदू महासभा के कार्यकर्ताओं के हाथ से तस्वीर छीनने की कोशिश में झूमाझटकी की और फिर गोडसे की तस्वीर की छीनकर उसपर कागज लपेट कर कार्यकर्ता को इस हिदायत के साथ दे दिया कि इसे अपने कार्यालय में ले जाएँ, सड़क पर ये दिखना नहीं चाहिए।हंगामे और तनाव की आशंका को देखते हुए काफी संख्या में पुलिस फोर्स हिंदू महासभा कार्यालय पर बुला लिया गया, पार्टी के मंडल महामंत्री किशोर माहौर ने कहा कि हम नाथूराम गोडसे की जयंती पर हम फल वितरण करने जा रहे थे लेकिन प्रशासन ने नहीं करने दिया, पूरे मामले में हिंदू महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयवीर भारद्वाज का कहना है कि गोडसे की जयंती के मौके पर गरीब बस्तियों में जाकर फल वितरण किया है, जो हम हर साल करते हैं, प्रशासन का काम है रोकना वो रोके लेकिन हम नहीं रुकेंगे, उन्होंने कहा कि हमने तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है कि पूरे देश भर में नाथूराम गोडसे की मूर्ति लगाने की अनुमति दी जाए।उधर कोतवाली थाने के टी आई दामोदर गुप्ता ने कहा ये खुले में तस्वीर लेकर जा रहे थे, मीडिया के लोग उनके आगे पीछे चल रहे थे , कोई अनावश्यक तनाव ना हो इसलिए तस्वीर को ढँक कर उनके कार्यालय पहुंचा दिया गया , टी आई ने झूमाझटकी से साफ इंकार कर दिया लेकिन तस्वीरों में ये साफ दिखाई दे रहा है।

जीवाजी विवि मीट द एक्जीक्यूटिव कार्यशाला हुई

जीवाजी विवि के फूड टेक्नोलॉजी विभाग में शुक्रवार को मीट द एक्जीक्यूटिव कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंडस्ट्री एक्सपर्ट आनंद भाटिया ने छात्रों को उद्योग शुरू करने मे आने वाली कठिनाईयों और जरूरतों को बताया उन्होंने छात्रों को उद्योग शुरू करने और उसमे आने वाली कठिनाईयों का वर्णन करते हुए सफलता की ओर जाने का मार्गदर्शन किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विभाग के कोऑर्डिनेटर डॉ मनोज शर्मा ने अपने अनुभव साझा करते हुए प्रेरित किया और बताया की विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्किल सेट और ट्रेनिंग की आवश्यकता है।इसके मद्देनजर विभाग लगातार ट्रेनिंग करा रहा है , ताकि विद्यार्थी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़े और मार्केट की जरूरतों के हिसाब से अपने को तैयार कर सके।ट्रेनिंग के बाद छात्रों ने अपने - अपने प्रश्न का संतुष्टि पूर्वक जबाव जानकर कार्यक्रम को समापन किया, इस अवसर पर डॉ. मनोज शर्मा, ह्रह्र निधी गोस्वामी, रुचि बंसल, उमा बंसल सहित छात्र एवं छात्रायें उपस्थित रहे।

विधायक डॉ. सिकरवार ने वार्ड 56 एवं 59 में रोड निर्माण के लिए किया भूमिपूजन

ग्वालियर। ग्वालियर पूर्व से कांग्रेस विधायक डॉ. सतीश सिकरवार ने आज वार्ड क्रमांक 59 के अंतर्गत महादजी नगर में सी.सी. रोड निर्माण एवं वार्ड क्रमांक 56 में नाका तिराहा से झांसी रोड थाने तक बनने वाली डामरीकरण रोड के लिए आम जनता के साथ भूमिपूजन किया। इस मौके पर विधायक डॉ. सिकरवार ने आमजनों से चर्चा करते हुये कहा कि आप लोगों की मांग पर इस स?क का निर्माण कराया जा रहा है, इन स?कों के निर्माण से क्षेत्रीय जनता को काफी सुविधायें उपलब्ध होगीं। उन्होंने कहा कि जन भावनाओं के अनुरूप क्षेत्र में विकास कार्यों को अनवरत जारी रखा जायेगा। विकास कार्य निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है। हम सब का लक्ष्य क्षेत्र का विकास और प्रगति है। इसी मूल मंत्र के साथ जनसेवा करते हुए विकास कार्यों को गति प्रदान करते रहेगें। क्षेत्रीय नागरिकों ने इस अवसर पर विधायक डॉ. सिकरवार का पुष्?पहार पहनाकर स्वागत किया और विधायक ने लोगों की अन्य समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के निराकरण करने के निर्देश दिए।भूमिपूजन कार्यक्रम में प्रदेश प्रवक्ता राम पाण्डे, एम.आई.सी सदस्य अवधेश कौरव, क्षेत्रीय पार्षद श्रीमती सरोज कंषाना, पार्षद सुरेन्द्र साहू, युवा कांग्रेस राष्?ट्रीय सचिव हेवरन कंषाना, पार्षद अंकित कठठ्ल, ब्लॉक अध्यक्ष अनूप शिवहरे, भूपेन्द्र कंषाना, महेन्द्र शर्मा 'विक्की', श्रीमती गीता गुप्ता, गगन त्यागी, राजेश पाराशर, नरेन्द्र मिश्रा, जगवीर परमार, योगेन्द्र मिश्रा, अमर शर्मा, मिक्की तोमर, राजेन्द्र परिहार, प्रेमसिंह तोमर, अनिल शर्मा 'बिट्टू', महेन्द्र शुक्ला, आशीष साहू, विनोद साहू आदि मौजूद रहे।

फोन नम्बर व पते सहित जानकारी रखें कि आपदा के समय संसाधन कहाँ से मिलेंगे कलेक्टर

ग्वालियर। आपदा के समय कौन सा संसाधन किससे और कहाँ से मिलेगा। वहाँ के फोन नम्बर व घर का पता क्या है, यह सभी आपदा प्रबंधन कार्य योजना में शामिल करें। साथ ही खासतौर पर बाढ़ की स्थिति निर्मित होने पर पशुओं सहित आम जनों के लिये राहत शिविरों के लिये स्थलों का चयन भी इसमें शामिल करें। इस आशय के निर्देश कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने आपदा प्रबंधन कार्ययोजना को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से बुलाई गई बैठक में संबंधित अधिकारियों को दिए। शुक्रवार को यहाँ जिला पंचायत के सभागार में आयोजित हुई बैठक में कलेक्टर सिंह ने जिले के नदी-नालों में व्यापक स्तर पर बाढ़ से बचाव की व्यापक मॉकड्रिल करने पर विशेष जोर दिया। साथ ही वर्षा ऋ्तु के दौरान जल भराव से उत्पन्न स्थिति को ध्यान में रखकर नदी-नालों व सड़कों इत्यादि पर चेतावनी के शाइन बोर्ड लगाने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए। कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने बैठक में निर्देश दिए कि एसडीएम व तहसीलदार सहित राहत व बचाव कार्यों से जुड़े सभी विभागों के अधिकारियों के वाहनों में टॉर्च व रस्सी अनिवार्यत- रहनी चाहिए। इससे अधिकारी स्वयं की सुरक्षा के साथ-साथ औरों को बचाने में मददगार बन सकते हैं। कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने खुले बोर, कुँए-बावड़ी इत्यादि को आम जन के लिहाज से असुरक्षित रखने वाले लोगों के खिलाफ धारा-133 के तहत वारंट जारी करने के निर्देश बैठक में दिए। उन्होंने सभी एसडीएम को हिदायत दी कि इस कार्य को प्रमुखता से किया जाए। अग्नि दुर्घटना पर त्वरित अंकुश लगाने के उद्देश्य से कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने ग्रामीण अंचल में उपलब्ध टैंकरों में मोटर फिट कराने के निर्देश भी बैठक में दिए। उन्होंने कहा आपदा के समय ये टैंकर काफी उपयोगी साबित होंगे। बैठक में मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान व मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की समीक्षा भी की गई। कलेक्टर श्री अक्षय कुमार सिंह एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार ने सहजता से सीएम हैल्पलाइन की शिकायतों को निराकृत करने की प्रक्रिया बैठक में समझाई। साथ ही संबंधित अधिकारियों को लाड़ली बहना योजना में पंजीकृत शेष महिलाओं की जल्द से जल्द डीबीटी कराने के निर्देश भी दिए। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार व अपर कलेक्टर एच बी शर्मा सहित जिले के सभी एसडीएम व अन्य राजस्व अधिकारी तथा होमगार्ड, जल संसाधन, पीएचई व अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

कांग्रेस उत्साहित, मप्र में सरकार बनायेगी : अजय सिंह

ग्वालियर। पूर्व मंत्री एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और ग्वालियर चंबल संभाग के प्रभारी अजय सिंह उर्फ राहुल भैयया ने कहा है कि कर्नाटक चुनावों के परिणामों के बाद से कांग्रेस उत्साहित है। उन्होंने कहा कि आगे आने वाले मध्यप्रदेश के चुनावों में भी कांग्रेस दम खम से आगे बढकर अधिक से अधिक सीट हासिल कर सरकार बनायेगी।राहुल सिंह आज अपने प्रवास के दौरान पत्रकारों से चाय पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पिछले चुनावों में विंध्य और ग्वालियर चंबल में कमजोर हो गई थी अब फोकस कर इन क्षेत्रों में अधिक मेहनत कर पार्टी की स्थिति और मजबूत करेंगे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह ने सिंधिया पर जमकर तंज कसा है। उनका कहना है कि कर्नाटक में धोखेबाजों को हराने के बाद अब मध्य प्रदेश में भी जनता धोखेबाजों को हराएगी। उन्होंने कहा है कि कर्नाटक के बाद अब मध्य प्रदेश भी हम जीतेंगे। इस दृष्टि से दोनों ही राज्यों की स्थितियां एक जैसी ही हैं। वहीं कांग्रेस को हराने वाले नेता ज्योतिरादित्य सिंधिया और उनके जैसे लोग कांग्रेस से चले गए हैं इसका लाभ कांग्रेस को होने वाला है। अब कांग्रेस में ऐसा कोई नहीं बचा है।उन्होंने कहा कि कांग्रेस आगामी विधानसभा चुनाव के लिए एक-एक सीट का परीक्षण करके टिकट देगी। हम यहां चुनाव क्यों हारते थे यह सभी जानते हैं। कांग्रेस नेता अशोक सिंह का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जब भी चुनाव आता था तब यहां के कार्यकर्ताओं को गुना भेज दिया जाता था। अब कांग्रेस इससे मुक्त हो चुकी है। कांग्रेस को हराने वाले पार्टी से जा चुके हैं और जनता भी समझ चुकी है कि कौन क्या करता है। चुनावी मुद्दों के संबंध में पूछे गए एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि पांच सौ रुपए में महिलाओं को गैस सिलेंडर उपलब्ध कराना तथा महिलाओं के सम्मान में उन्हें 1500 रुपए प्रतिमाह देने का हमने वचन दिया है। इसे सरकार आने पर पूरा करेंगे, लेकिन चुनाव में मुद्दे तो चुनाव के समय ही सामने आएंगे। उन्होंने कहा कि मुख्य मुद्दे बेरोजगारी और भ्रष्टाचार है।

जनशक्ति वेलफेयर सोसाइटी बनी गरीबो की मसीहा...

दैनिक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। जनशक्ति वेलफेयर सोसाइटी ने राजकुमार राजपूत जो कि आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे कोरोना के दौरान इनका जॉब चला गया था है को मां वैष्णो देवी टी स्टॉल ग्वालियर मुरार सिविल अस्पताल के पास खुलवा कर आर्थिक मजबूती प्रदान की सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री अरुणेश सिंह भदोरिया जी निरंतर रोजगार दिलवाने और देने का प्रयास करते रहते हैं अब तक तकरीबन 300 लोगों को प्राइवेट कंपनियों में रोजगार दिलवा चुके हैं 4 से 5 लोगों को स्वरोजगार दिलवाने में मदद की है भदोरिया जी निरंतर लोगों को आर्थिक मजबूती प्रदान करने के लिए कभी भी फ्री का लालच नहीं देते हैं उनको हमेशा रोजगार अथवा स्वरोजगार दिलवाने का प्रयास करते हैं उनका कहना है फ्री के लालच में आदमी अपना शारीरिक और आर्थिक दोनों नुकसान करता है इसलिए आदमी को कर्म करके ही अपनी रोजी-रोटी चलानी चाहिए

लंबित प्रकरणों में देरी पर ग्वालियर संभाग आयुक्त के सख्त तेवर, तहसीलदार व नायब तहसीलदारों के खिलाफ एक्शन की चेतावनी

ग्वालियर संभागीय आयुक्त दीपक सिंह ने आज शुक्रवार को ग्वालियर जिले के राजस्व अधिकारियों की बैठक में मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान-द्वितीय चरण की समीक्षा की बैठक में कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह भी मौजूद थे। बैठक में संभाग आयुक्त लंबित प्रकरणों को लेकर सख्त दिखाई दिए उन्होंने कहा कि लंबित नामांतरण, सीमांकन व बटवारा प्रकरण और 15 अप्रैल तक दर्ज सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों का निराकरण अगर 31 मई तक नहीं हुआ, तो संबंधित तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार की डीई (विभागीय जाँच) की जायेगी।आयुक्त ने कहा कि विवादित राजस्व प्रकरणों का निराकरण केवल कोर्ट में बैठकर ही नहीं बल्कि मौके पर पहुँचकर दोनों पक्षों के बयान लेकर व पटवारी रिपोर्ट के आधार पर किया जाए। राजस्व प्रकरणों का निराकरण मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान ङ्क द्वितीय चरण में शामिल है। इसलिए इसमें किसी प्रकार की ढिलाई बर्दाश्त नहीं होगी।जिला पंचायत के सभागार में आयोजित हुई बैठक में संभाग आयुक्त दीपक सिंह ने कहा कि शासन के स्पष्ट निर्देश हैं कि मुख्यमंत्री जनसेवा अभियान ङ्क द्वितीय चरण के तहत 31 मई तक सभी लंबित सीमांकन, नामांतरण व बटवारा प्रकरणों का निराकरण कर दिया जाए। उन्होंने सभी राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए कि अगले दो हफ्ते तक अपने-अपने क्षेत्र के भ्रमण पर रहें। संभाग आयुक्त ने निर्देश दिए कि एसडीएम, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, आरआई व पटवारी के हाथ में हर गाँव में लंबित सीएम हैल्पलाइन व राजस्व प्रकरणों की सूची रहे।आयुक्त दीपक सिंह ने यह भी निर्देश दिए कि सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों में ऐसे प्रकरण जो राजस्व विभाग से संबंधित और विवादित हैं उन्हें आरसीएमएस में दर्ज कर समयबद्ध कार्यक्रम के तहत निराकृत करें। साथ ही कहा कि मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान के तहत 68 प्रकार की सेवाएँ प्रदान की जानी हैं। क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के माध्यम से संबंधित हितग्राहियों को इन सेवाओं का वितरण कराएँ।संभागीय आयुक्त ने कहा कि अब अभियान के लिये दो हफ्ते से भी कम समय बचा है। इसलिये राजस्व अधिकारी युद्ध स्तर पर काम कर राजस्व प्रकरणों एवं सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों का निराकरण करें। उन्होंने सभी एसडीएम को अपने-अपने अनुविभाग में प्रभावी ढंग से जन सेवा अभियान को अंजाम दिलाने के निर्देश दिए।कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने बैठक में निर्देश दिए कि राजस्व अधिकारी सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों के निराकरण के लिये संबंधित शिकायतकर्ताओं को स्वयं फोन करें, सामूहिक गूगल मीट करें और उनके साथ बैठक करें। इससे शिकायतों का निश्चित ही संतुष्टिपरक निराकरण होगा।कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन प्रकरणों में रिकॉर्ड नहीं मिल रहा है उसकी जवाबदेही तय कर संबंधित अधिकारी-कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई कराएँ। साथ ही विधिवत रूप से नया रिकॉर्ड भी संधारित करें।राजस्व अधिकारियों की बैठक में कलेक्टर अक्षय कुमार सिंह ने जोर देकर कहा कि मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान के दौरान प्रमुखता के साथ भू-अभिलेखों से नाबालिग व बेवा जैसे शब्द हटाएँ। इसके लिये आवेदन का इंतजार न किया जाए। मतदाता सूची इत्यादि के आधार पर यह काम किया जा सकता है।कलेक्टर ने शासकीय व निजी जमीनों पर अतिक्रमण की जुर्रत करने वाले असमाजिक तत्वों पर कठोर कार्रवाई करने के निर्देश सभी राजस्व अधिकारियों को दिए। उन्होंने आरआरसी सहित अन्य प्रकार की राजस्व वसूली पर विशेष ध्यान देने के लिये भी कहा।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478